UNIVERSAL
LIBRARY
OU_186223
UNIVERSAL
LIBRARY

OSMANIA UNIVERSITY LIBRARY

Call No. H 425 K15P. Accession No. H 159

Author कामताप्रसाद गुरु.

Title संक्षिप्त हिंदी व्याकरण.

This book should be returned on or before the date last marked below.

प्रथम हिंदी व्याकरण

कामताप्रसाद गुरु, एम० आर० ए० एस०

प्रकाशक
काशी नागरीप्रचारिणी सभा

२००२ वि०

चतुर्थ संस्करण] [मूल्य ।)

प्रकाशक
नागरीप्रचारिणी सभा
काशी

मुद्रक
जेनरल प्रिंटिंग वर्क्स लि०
हौजकटरा, बनारस ।

भूमिका

हिंदी में शुद्ध और उपयुक्त व्याकरणों का अभाव देखकर हमने यह प्रथम हिंदी व्याकरण उन छोटे विद्यार्थियों के उपयोग के लिये लिखा है जो इस विषय को सीखना आरंभ करते हैं। इसमें हिंदी व्याकरण के केवल उन्हीं प्रधान विषयों का विवेचन किया गया है जो छोटी अवस्थावाले विद्यार्थियों के लिये सहज और उपयोगी हो सकते हैं। जो प्रधान विषय इस पुस्तक में आए हैं वे केंद्रानुसारी प्रणाली के आधार पर केवल स्थूल रूप से लिखे गए हैं; और एक दो स्थानों को छोड़ कहीं भी नियमों में अपवाद की जटिलता नहीं आई है।

इस पुस्तक की रचना अधिकांश में शिक्षा-पद्धति के अनुसार की गई है जिसमें विद्यार्थियों को बहुधा स्वाध्याय से विषय का ज्ञान प्राप्त हो सके और प्रत्येक पाठ के अंत में दिए गए अभ्यासों से वे अपनी योग्यता की जाँच आप ही कर सकें। तो भी 'बिनु गुरु होइ कि ज्ञान' के अनुसार शिक्षक की सहायता से यह पुस्तक विशेष रूप से उपयोगी हो सकती है; और संभवतः शिक्षक भी इस पुस्तक के आधार पर अपनी शिक्षा को अधिक उपयोगी कर सकते हैं।

गढ़ा फाटक,
जबलपुर
अक्षयतृतीया,
सं० १९७९

कामताप्रसाद गुरु

विषय-सूची

पाठ	१	वाक्य और शब्द	१
पाठ	२	उद्देश्य और विधेय	४
पाठ	३	संज्ञा और क्रिया	६
पाठ	४	सर्वनाम	८
पाठ	५	सकर्मक और अकर्मक क्रियाएँ	११
पाठ	६	विशेषण और क्रियाविशेषण	१५
पाठ	७	संबंधसूचक और समुच्चयबोधक	२०
पाठ	८	विस्मयादि-बोधक	२४
पाठ	९	सहज पद-परिचय (व्याख्या)	२६
पाठ	१०	विकारी और अविकारी शब्द	२८
पाठ	११	लिंग	३०
पाठ	१२	वचन	३५
पाठ	१३	कारक	३८
पाठ	१४	सर्वनामों की कारक-रचना	५२
पाठ	१५	विशेषण के रूपांतर	५९
पाठ	१६	वाच्य	६०
पाठ	१७	काल	६२
पाठ	१८	प्रयोग	६३
पाठ	१९	काल-रचना	६५
पाठ	२०	पद-परिचय	७५
पाठ	२१	साधारण वाक्य का पृथक्करण	७८
पाठ	२२	अक्षर	८३
परिशिष्ट		प्रश्नावली	८७

प्रथम हिंदी व्याकरण

पाठ—१

वाक्य और शब्द

१-पानी बरसा ।

हवा चली ।

आँधी आवेगी ।

लड़के घरों में आ रहे हैं ।

मोहन अभी तक पेड़ के तले खड़ा है ।

ऊपर कई पूरी-पूरी बातें लिखी गई हैं । इनमें से प्रत्येक बात कहनेवाले का एक पूर्ण विचार प्रकट करती है । हर एक पूरी बात अथवा पूर्ण विचार को व्याकरण में वाक्य कहते हैं ।

अभ्यास

(क) रोटी, दाल, भात, नमक और घी के विषय में एक एक वाक्य बनाओ ।

(ख) अपनी पाठ्य-पुस्तक में से छः वाक्य चुनकर लिखो ।

२-सूरज निकलेगा ।

उजेला हुआ ।

ठंढी हवा चली ।

चिड़ियाँ पेड़ों पर बोल रही हैं।
लड़के पाठशाला में पढ़ने को जावेंगे।

ऊपर लिखे हुए वाक्यों में से प्रत्येक में दो वा दो से अधिक शब्द हैं। सूरज, निकलेगा, उजेला, हुआ, ठंढी हवा आदि अलग अलग शब्द हैं। प्रत्येक वाक्य दो या अधिक शब्दों के मेल से बनता है। शब्द से किसी एक वस्तु का बोध होता है और वाक्य से हम किसी वस्तु के विषय में कुछ कहकर एक पूरा विचार प्रकट करते हैं। केवल एक शब्द से वाक्य नहीं बन सकता। वाक्य में कम से कम दो शब्द रहते हैं।

३—आओ।
बैठूँगा।
क्या ?
प्रणाम।

ऊपर के वाक्य एक एक शब्द से बने हुए जान पड़ते हैं; पर उनमें से प्रत्येक में बोलनेवाले ने अपने सुभीते के लिये एक या दो शब्द छोड़ दिए हैं; जैसे,

आओ = (तुम) आओ।
बैठूँगा = (मैं) बैठूँगा।
क्या = क्या (है)
प्रणाम = (मैं) प्रणाम (करता हूँ)

आवश्यकता न होने पर किसी शब्द को वाक्य में न लाना उस शब्द का लोप कहलाता है।

४-अच्छा लड़का ।
मोहन की किताब ।
नौकर घर रसोई ।
गाँव से आया ।
सबेरा होते ही ।

ऊपर प्रत्येक लकीर में दो वा दो से अधिक शब्द साथ साथ लिखे गए हैं, पर उनसे वाक्य नहीं बना। क्यों ? क्योंकि उनसे पूरा विचार सूचित नहीं होता। उन शब्दों को पढ़कर हमें और भी कुछ जानने की इच्छा होती है। ऊपर लिखे शब्दों में कुछ और शब्द जोड़ने से पूरे वाक्य बन सकेंगे; जैसे,

अच्छा लड़का सच बोलता है।
मोहन की किताब फट गई।
नौकर घर में रसोई बनाता है।
ब्राह्मण गाँव से आया।
सबेरा होते ही लोग चले गए।

वाक्य शब्दों के ऐसे समूह को कहते हैं जिससे एक पूरा विचार प्रकट होता है। कोई भी दो या अधिक शब्द साथ साथ रख देने से वाक्य नहीं बनता।

अभ्यास

(क) दो दो शब्दों के चार वाक्य बनाओ।
(ख) दो से अधिक शब्दों के तीन वाक्य बनाओ।

(ग) एक एक शब्द के दो वाक्य बनाकर यह बताओ कि उनमें कौन कौन शब्द छूटे (लुप्त) हैं।

(घ) नीचे लिखे अधूरे वाक्यों को पूरा करो—

लड़का घर—। —दूर भागा। सिपाही किले से—। कुत्ता नदी—। सड़क के पास—।

पाठ—२

उद्देश और विधेय

५-मोहन गया। ग्वाला दूध बेचता है।
पत्ते हिलते हैं। घड़े का मुँह छोटा था।
बिजली चमकी। बंबई बड़ा शहर है।

ऊपर लिखे प्रत्येक वाक्य में (१) किसी प्राणी या पदार्थ का नाम लिया गया है और (२) उस प्राणी या पदार्थ के विषय में कुछ कहा गया है; जैसे,

प्राणी या पदार्थ का नाम	प्राणी या पदार्थ के विषय में कुछ कहना
मोहन	गया
पत्ते	हिलते हैं
बिजली	चमकी
ग्वाला	दूध बेचता है
घड़े का मुँह	छोटा था
बंबई	बड़ा शहर है

पूरा विचार प्रकट करने के लिये जब हम कोई वाक्य बोलते हैं या लिखते हैं तब (१) किसी प्राणी या पदार्थ का नाम लेते हैं, (२) उस प्राणी या पदार्थ के विषय में कुछ कहते हैं।

प्रत्येक वाक्य के दो मुख्य भाग होते हैं उद्देश्य और विधेय। वाक्य में जिस प्राणी या पदार्थ के विषय में कहा जाता है उसे उद्देश्य कहते हैं और उद्देश्य के विषय में जो कुछ कहा जाता है वह विधेय कहलाता है।

पूर्वोक्त वाक्य के खंड इस प्रकार होंगे -

उद्देश्य	विधेय
मोहन	गया
पत्ते	हिलते हैं
बिजली	चमकी
ग्वाला	दूध बेचता है
घड़े का मुँह	छोटा था
बंबई	बड़ा शहर है

अभ्यास

(क) नीचे लिखे वाक्यों में उद्देश्य और विधेय बताओ—

हवा चलती है। फूल खिले। रात हुई। चंद्रमा निकलेगा। पीतल पीला होता है। राजा साधु हो गया। अब उठो। नौकर चिट्ठी लायगा। नर्मदा अमरकंटक पर्वत से निकलती है। लड़के का खिलौना खो गया।

(ख) नीचे लिखे उद्देशों में विधेय जोड़कर एक एक वाक्य बनाओ —

पेड़—। दीवाल—। राम—। बड़ा घोड़ा—। क्रोध—। पानी—। ब्राह्मण—। सूरज—। राजा का पुत्र—।

(ग) नीचे लिखे विधेयों में उद्देश जोड़ो और एक एक वाक्य बनाओ-

—सोता है। —काम करता है। —चिट्ठी लिखी। —पूरा होगा। —लाया गया। —पेड़ कटता था। —पानी पिएगा। —सुंदर है।

पाठ—३

संज्ञा और क्रिया

६-लड़की खेलेगी।

नौकर गया।

गाड़ी आवेगी।

सूरज निकला।

ऊपर लिखे प्रत्येक वाक्य में दो दो शब्द हैं, जिनमें से एक उद्देश और दूसरा विधेय है। दो शब्दों वाले वाक्य में एक शब्द उद्देश और दूसरा विधेय होता है। इन वाक्यों में लड़की, नौकर, गाड़ी और सूरज उद्देश हैं तथा खेलेगी, गया, आवेगी और निकला विधेय हैं।

उद्देश में आने वाले शब्द का कार्य विधेय में आनेवाले शब्द के कार्य से भिन्न है।

लड़की, नौकर, गाड़ी और सूरज प्राणियों या पदार्थों का नाम सूचित करते हैं और खेलेगी, गया, आवेगी और निकला उन प्राणियों या पदार्थों के विषय में कुछ कहते हैं। वाक्य में भिन्न भिन्न कार्य करने वाले शब्द आते हैं जिन्हें व्याकरण में शब्द-भेद कहते हैं।

७—प्राणी या पदार्थ का नाम सूचित करनेवाले शब्द-भेद को संज्ञा कहते हैं; जैसे, राम, लड़का, स्त्री, सड़क, पेड़ आदि। किसी प्राणी या पदार्थ के विषय में कुछ कहने वाला शब्द-भेद क्रिया कहलाता है; जैसे,

संज्ञा	क्रिया
राम	आया
लड़का	सोता था
स्त्री	जावेगी
सड़क	बिगड़ गई

८—स्वयं प्राणी या पदार्थ को संज्ञा नहीं कहते; किंतु प्राणी या पदार्थ के नाम को संज्ञा कहते हैं। जिस कागज पर यह पुस्तक छपी है वह कागज संज्ञा नहीं है, किंतु 'कागज' शब्द संज्ञा कहता है। व्याकरण में वस्तुओं का विचार नहीं करते, किंतु शब्दों का विचार करते हैं।

संज्ञा और क्रिया मुख्य शब्द-भेद हैं, क्योंकि इनके बिना वाक्य नहीं बन सकता। प्रत्येक वाक्य में कम से कम एक संज्ञा और उसके साथ एक क्रिया होनी चाहिए।

अभ्यास

(क) नीचे लिखे वाक्यों में कारण-सहित संज्ञाएँ और क्रियाएँ बताओ—

पानी बरसा। हवा चली। मछलियाँ तैर रही हैं। गाय खेत में चरती थी। सूरज निकलेगा। लड़का कोठे पर गया। फूलों में सुगंध है। उजेला हो रहा है। रात को तारे दिखाई देते हैं। कुएँ पर भीड़ लगी है।

(ख) अपनी पाठ्य-पुस्तक में से संज्ञाएँ और क्रियाएँ निकालो।

पाठ—४

सर्वनाम

६—पुत्र ने पिता से कहा कि मैं पाठशाला को जाता हूँ। मालिक ने नौकर से पूछा कि तुम कब आए? लड़का घर में है; वह अभी बाहर जायगा। दरवाजे पर कौन खड़ा है। पानी में कुछ है।

ऊपर लिखे पहले वाक्य में "मैं" शब्द पहले कही हुई "पुत्र" संज्ञा के बदले आया है और उससे "पुत्र" संज्ञा का बोध होता है। दूसरे वाक्य में "तुम" शब्द 'नौकर" संज्ञा के बदले में आया है और उससे "नौकर" संज्ञा का बोध होता है। इसी प्रकार

तीसरे वाक्य में "वह" शब्द "लड़का" संज्ञा के बदले में आया है और उससे "लड़का" का बोध होता है। चौथे वाक्य में "कौन" शब्द आया है जो किसी अनजाने प्राणी के नाम के बदले आया है। पाँचवें वाक्य में "कुछ" शब्द किसी अनजाने पदार्थ के नाम का बोध कराता है।

मैं, तुम और वह सर्वनाम कहलाते हैं; क्योंकि ये शब्द संज्ञाओं के बदले अर्थात् धातुओं, प्राणियों और पदार्थों के नामों के बदले में आते हैं। सर्वनाम उस शब्द को कहते हैं जो किसी संज्ञा के बदले में आता है।

१०—सर्वनाम स्वयं किसी वस्तु, प्राणी वा पदार्थ का नाम नहीं हैं किंतु वस्तु के नाम के बदले में आता है। "मैं" कहने से किसी वस्तु का नाम सूचित नहीं होता, किंतु वह शब्द वस्तु के नाम के बदले में लाया जाता है। जब संज्ञा को कहकर "मैं" का उपयोग करते हैं तब जाना जाता है कि वह किसी संज्ञा के बदले में आया है। सर्वनाम ऐसा शब्द है जो किसी भी वस्तु के नाम के बदले में आ सकता है।

११—संज्ञा और सर्वनाम में यह अंतर है कि संज्ञा से सदैव उसी वस्तु का बोध होता है जिसका वह नाम है; परंतु सर्वनाम किसी भी वस्तु के नाम के बदले में आ सकता है। 'घर' संज्ञा से सदैव रहने के स्थान का बोध होता है, परंतु 'यह' वा 'वह' कहने से घर, सड़क, लड़का आदि कोई भी वस्तु सूचित हो सकती है।

संज्ञा और सर्वनाम का मिलान

संज्ञा	सर्वनाम
पक्षी उड़ता है।	पक्षी बैठा है; वह उड़ेगा।
घोड़ा भागा।	घोड़ा छूट गया ; वह भागेगा।
लड़के पुस्तक पढ़ेंगे।	लड़कों के पास पुस्तक है। वे उसे पढ़ेंगे।

अभ्यास

(क) नीचे लिखे वाक्यों में सर्वनाम बताओ —लड़के के पास एक पुस्तक है जो उसे इनाम में मिली थी। मालिक ने नौकर से कहा कि तुम अभी मेरे साथ चलो। राम आया है, उसे भीतर बुलाओ। मैं नहीं जानता कि इस घर में कौन रहता है। लड़कों ने सब धरती खोद डाली, पर कुछ न पाया। यह क्या है ? महामारी का कारण आज तक किसी ने नहीं जाना।

(ख) नीचे लिखे वाक्यों में संज्ञाओं के बदले सर्वनाम लगाओ— जब फूल फूलते हैं तब फूलों से सुगंध निकलती है। दशरथ ने राम से कहा कि राम वन को न जावें। यह पुस्तक अच्छी है क्योंकि पुस्तक में मनोहर कहानियाँ हैं। पक्षी लड़कों से पहले जागते हैं, इसलिये पक्षियों को लड़कों से अधिक चतुर समझना चाहिए। एक लड़का लड़के के पिता के साथ गाँव को गया। सीता ने सीता की पुस्तक फाड़ डाली।

(ग) ऐसे पाँच वाक्य बनाओ जिनमें उद्देश सर्वनाम हों।

(घ) अपनी पाठ्य पुस्तक में से ऐसे पाँच वाक्य निकालो जिनमें सर्वनाम आए हों।

*

पाठ –५

सकर्मक और अकर्मक क्रियाएँ

१२ लड़का कागज फाड़ता है।
नौकर फूल लावेगा।
किसान बीज बोता था।
दर्जी ने कपड़ा सिया।

इन वाक्यों में विधेयों में दो दो शब्द हैं—एक संज्ञा और दूसरा क्रिया। पहले वाक्य के विधेय में "कागज" संज्ञा है, क्योंकि वह एक पदार्थ का नाम सूचित करता है और "फाड़ता है" क्रिया है क्योंकि उसके द्वारा हम "लड़का" उद्देश के विषय में कुछ कहते हैं। "लड़का" उद्देश से "फाड़ता है" क्रिया का काम करनेवाले का भी बोध होता है, इसलिये "लड़का" संज्ञा को "फाड़ता है" क्रिया का कर्त्ता कहेंगे। दूसरे वाक्य में "लावेगा" क्रिया का काम करनेवाला नौकर है इसलिये "नौकर" शब्द "लावेगा" क्रिया का कर्त्ता है। इसी प्रकार "किसान" शब्द "बोता था" क्रिया का और "दर्जी" शब्द "सिया" क्रिया का कर्त्ता है।

जिस शब्द से क्रिया के करनेवाले का बोध होता है उसे कर्त्ता कहते हैं।

पहले वाक्य में "फाड़ता है" क्रिया का जो काम है—अर्थात् हाथ या कैंची चलाना—उसका फल "लड़का" कर्त्ता पर पड़कर

"कागज" संज्ञा पर भी पड़ता है, क्योंकि काटने से कागज पर भी असर पड़ता है। दूसरे वाक्य में "लावेगा" क्रिया का फल "नौकर" कर्त्ता के सिवा "फूल" संज्ञा पर भी पड़ता है, क्योंकि लाने में फूल भी इधर का उधर हो जाता है। इसी प्रकार "बोता था" क्रिया का फल 'किसान' और 'बीज' पर तथा 'सिया' क्रिया का फल "दर्जी" और 'कपड़े' पर पड़ता है। 'कागज' 'फाड़ता है' क्रिया का कर्म कहलाता है। इसी तरह 'फूल' को 'लावेगा' क्रिया का कर्म और "बीज" को "बोता था" क्रिया का कर्म कहते हैं। "कपड़ा" 'सिया' क्रिया का कर्म है।

क्रिया में व्यापार का फल कर्त्ता से निकलकर जिस शब्द पर पड़ता है उसे उस क्रिया का कर्म कहते हैं और जिस क्रिया के व्यापर का फल कर्त्ता से निकलकर किसी दूसरे शब्द पर पड़ता है उस क्रिया को सकर्मक क्रिया कहते हैं। ऊपर के वाक्यों में "फाड़ता है", 'लावेगा', 'बोता था' "सिया" सकर्मक क्रियाएँ हैं, क्योंकि इनका फल इनके कर्त्ताओं से निकल कर दूसरे शब्दों पर पड़ता है। कर्म के साथ रहने के कारण ये क्रियाएँ सकर्मक कहलाती हैं।

सकर्मक क्रिया के कर्म के स्थान में बहुधा संज्ञा आती है, पर संज्ञा के बदले सर्वनाम भी आ सकता है; जैसे लड़के ने मुझे बुलाया, हम उनको जानते हैं।

१३—फल फले।

लड़की सोती है।
मोहन हँसता था।
नौकर आवेगा।

इन वाक्यों के विधेयों में एक एक शब्द है और वह क्रिया है। पहले वाक्य में 'फूले' क्रिया का कर्त्ता "फूल" है, क्योंकि वह "फूले" क्रिया का काम करनेवाला है। "फूले" क्रिया के व्यापार का फल केवल "फूल" कर्त्ता ही पर पड़ता है और किसी पदार्थ पर नहीं पड़ता। फूलने से फूल ही में हेर-फेर होता है। दूसरे वाक्य में "सोती है" क्रिया का फल केवल उसके कर्त्ता अर्थात् "लड़की" पर पड़ता है। इसी प्रकार "हँसता था" क्रिया का केवल उसके कर्त्ता "मोहन" पर और "आवेगा" क्रिया का फल केवल "नौकर" कर्त्ता पर पड़ता है। "फूले" "सोती है" "हँसता था" और "आवेगा" क्रियाएँ अकर्मक कहलाती हैं, क्योंकि इनका फल केवल इनके कर्त्ताओं ही में रहता है। जिस क्रिया के व्यापार का फल केवल कर्त्ता ही पर पड़ता है उसे अकर्मक क्रिया कहते हैं। सकर्मक क्रियाओं के साथ कर्म रहता है; पर अकर्मक क्रियाओं के साथ कर्म नहीं रहता इसलिये इनका नाम अकर्मक पड़ा है।

१४—अकर्मक क्रिया का अर्थ अकेले ही आने पर स्पष्ट हो जाता है; जैसे, लड़का दौड़ता है; पर सकर्मक क्रिया का अर्थ उसके साथ कर्म आने पर ही पूरा होता है। यदि हम कहें कि लड़का फाड़ता है तो यह जानने कि इच्छा होती है कि क्या

फाड़ता है, अर्थात् 'फाड़ता है' क्रिया का फल कर्त्ता से निकलकर किस वस्तु पर पड़ता है।

अकर्मक और सकर्मक क्रियाओं का मिलान

अकर्मक	सकर्मक
लड़का दौड़ता है।	लड़का पानी पीता है।
गाय रँभाती थी।	गाय घास चरती थी।
पानी गिरेगा।	पानी कचरा बहावेगा।

अभ्यास

(क) नीचे लिखे वाक्यों में क्रियाओं के भेद बताओ—पानी गिरा। माली फूल तोड़ता है। हवा चली। बिजली चमकती है। मछलियाँ तैरती हैं। चोर भागा। सिपाही सोता था। चूहे बिलों में रहते हैं। बिल्ली दूध पी गई। स्त्री रसोई करती है। नौकर चिट्ठी लावेगा। लड़का चित्र बनाता था। उसने मुझे बुलाया है।

(ख) नीचे लिखी अकर्मक क्रियाओं में कर्त्ता लगाओ—उड़ते हैं, दौड़ेगा, हँसता था, सोता है, घूमती है, गिरेगा, चमकता था, आया है, कूदा।

(ग) नीचे लिखी सकर्मक क्रियाओं में कर्त्ता और कर्म जोड़ो—भेजता है, खोदेगा, लाया, सूँघा, फेंकेगा, सहते हैं, बुलाया था, खींच रहा है, काटा, धोया, लावेगा, जोता है।

(घ) नीचे लिखे कर्त्ताओं में अकर्मक क्रियाएँ जोड़ो—कुत्ता, फूल, बादल, घर, तारे, मक्खियाँ, सिर, हाथ, कपड़ा, चिट्ठी, राम।

(ङ) नीचे लिखे कर्मों के साथ कर्त्ता और क्रियाएँ जोड़कर वाक्य बनाओ—चोर, धरती, घोंसले, पेड़, मूर्त्ति, कपड़ा, घड़ी, यह, मुझे, देश. कमल, सूरज।

पाठ—६

विशेषण और क्रियाविशेषण

१५—छोटा लड़का खेल रहा है।

लाल गाय खो गई।

ऊँची दीवार गिर पड़ी।

बूढ़ा आदमी सो गया।

हरी घास उगेगी।

ऊपर के वाक्यों में दो-दो शब्दों के उद्देश हैं; जैसे,

उद्देश	विधेय
छोटा लड़का	खेल रहा है।
लाल गाय	खो गई।
ऊँची दीवाल	गिर पड़ी।
बूढ़ा आदमी	सो गया।
हरी घास	उगेगी।

इन उद्देशों में एक एक संज्ञा है और वह मुख्य शब्द-भेद है, क्योंकि वाक्य बनाने के लिये कम से कम एक संज्ञा अवश्य चाहिए। प्रत्येक संज्ञा के साथ एक-एक ऐसा शब्द आया है

जो उस संज्ञा से सूचित होनेवाले पदार्थ के विस्तार को कम कर देता है।

पहले वाक्य में 'लड़का' संज्ञा के साथ 'छोटा' शब्द आया है। 'लड़का' संज्ञा से सब प्रकार के भले-बुरे छोटे-बड़े, चतुर-मूर्ख आदि लड़कों का बोध होता है; पर 'छोटा लड़का' कहने से बड़े और मध्यम अवस्था के लड़के छूट जाते हैं। 'छोटा' शब्द 'लड़का' संज्ञा के अर्थ को सीमा को कम कर देता है। व्याकरण में 'छोटा' शब्द विशेषण कहलाता है, क्योंकि यह संज्ञा के अर्थ में कुछ विशेषता ला देता है।

इसी प्रकार दूसरे वाक्य में 'लाल' विशेषण 'गाय' संज्ञा की विशेषता बतलाता है। ऊपर लिखे वाक्यों में छोटा, ऊँची, बूढ़ा और हरी विशेषण है।

विशेषण उस शब्द-भेद को कहते हैं जो संज्ञा की विशेषता बतलाता है।

१६—संज्ञा अपना अर्थ आप ही प्रकट करती है परंतु विशेषण का ठीक अर्थ तभी प्रकट होता है जब वह संज्ञा के साथ आता है। यदि 'छोटा' विशेषण अकेला आवे तो उससे ठीक ठीक यह नहीं जाना जाता कि छोटा क्या है। पर यदि 'छोटा कपड़ा' 'छोटा घोड़ा' या 'छोटा पेड़' कहा जाय तो 'छोटा' विशेषण का अर्थ स्पष्ट हो जाता है। इसलिये विशेषण वाक्य में मुख्य शब्द नहीं है, किंतु संज्ञा का सहायक शब्द है।

१७—विशेषण और सर्वनाम में यह अंतर है, कि विशेषण संज्ञा के साथ आता है, परंतु सर्वनाम संज्ञा के साथ नहीं आता। जब सर्वनाम संज्ञा के साथ आता है तब वह विशेषण हो जाता है। जैसे, यह लड़का चतुर है, वह पुस्तक कौन ले गया। इन वाक्यों में यह और वह विशेषण हैं और लड़का तथा पुस्तक की विशेषता बताते हैं।

विशेषण और सर्वनाम का मिलान

विशेषण	सर्वनाम
छोटा लड़का आया	लड़का आया, वह छोटा है
एक ऊँची दीवाल गिरी	एक दीवाल गिरी जो ऊँची थी
यह पुस्तक अच्छी है	अच्छी पुस्तक यह है

अभ्यास

(क) नीचे लिखे वाक्यों में विशेषण बताओ - पीला फूल फूला। कड़ी धूप पड़ने लगी। कच्चे आम खट्टे होते हैं। बड़ा घोड़ा भाग गया। गोल टोपी अच्छी है। छोटा लड़का खेल रहा है। ऊँची दूकान की फीकी मिठाई। छोटे मुँह बड़ी बात।

(ख) नीचे लिखी संज्ञाओं में उपयुक्त विशेषण जोड़कर वाक्य बनाओ – कुत्ता, कपड़ा, गरमी, पानी, गाड़ी, हवा, बात, चोट।

(ग) अपनी पाठ्य पुस्तक में से विशेषणों के पाँच उदाहरण दो।

१८—गाड़ी अभी आवेगी।
लड़का वहाँ जाता है।
चोर जल्दी भाग गया।
नौकर अचानक जागा।

पीछे लिखे वाक्यों में दो दो शब्दों के विधेय हैं, जैसे---

उद्देश	विधेय
गाड़ी	अभी आवेगी।
लड़का	वहाँ जाता है।
चोर	जल्दी भागा।
नौकर	अचानक जागा।

इन विधेयों में एक एक क्रिया है और वह मुख्य शब्द-भेद है, क्योंकि वाक्य बनाने के लिये एक क्रिया अवश्य चाहिए। प्रत्येक क्रिया के साथ एक ऐसा शब्द आया है जो उस क्रिया की विशेषता बतलाता है। पहले वाक्य में 'आवेगी' क्रिया से जितनी बात जानी जाती है उससे अधिक बात "अभी आवेगी" कहने से सूचित होती है। 'अभी' शब्द 'आवेगी' क्रिया के अर्थ को बढ़ाता है। व्याकरण में अभी शब्द को क्रिया-विशेषण कहते हैं, क्योंकि वह क्रिया की विशेषता बतलाता है।

इसी प्रकार दूसरे वाक्य में 'वहाँ' शब्द 'जाता' है क्रिया की विशेषता बताता है। ऊपर के वाक्यों में अभी, वहाँ, जल्दी और अचानक क्रिया-विशेषण हैं। जो शब्द किसी क्रिया की विशेषता बतलाता है उसे क्रिया-विशेषण कहते हैं।

संज्ञा का जो संबंध विशेषण से है, क्रिया का वही संबंध क्रिया-विशेषण से है। जिस प्रकार विशेषण संज्ञा के साथ आकर सार्थक होता है उसी प्रकार क्रिया-विशेषण क्रिया के

साथ आकर सार्थक होता है और जिस प्रकार विशेषण मुख्य शब्द-भेद नहीं है उसी प्रकार क्रिया विशेषण भी मुख्य शब्द-भेद नहीं है।

विशेषण और क्रिया-विशेषण का मिलान

विशेषण	क्रिया-विशेषण
पक्का फल गिरा	फल अचानक गिरा
अच्छा लड़का आज्ञा मानता है	लड़का सदैव आज्ञा मानता है
छोटी गाड़ी आवेगी	गाड़ी अभी आवेगी

अभ्यास

(क) नीचे लिखे वाक्यों में क्रिया-विशेषण बताओ—सबेरे ठंढी हवा चलती है। गोली दूर गई। चिड़िया कहां बैठी है? लड़का नहीं आया। सिपाही तुरंत लौटेगा। मेरा भाई अवश्य जावेगा। मोहन बहुत सोता है। घोड़ा अचानक भागा। उसकी चिट्ठी कल आई थी। यह काम कैसे होगा? बैल अभी गया है?

(ख) नीचे लिखी क्रियाओं में क्रिया-विशेषण जोड़कर वाक्य बनाओ—उड़ा, आता था, सोवेगा, जागता है, कूदता था, दौड़ेगी, मिले।

(ग) अपनी पाठ्य-पुस्तकों में से क्रिया-विशेषणों के पाँच उदाहरण दो।

पाठ ७

संबंधसूचक और समुच्चयबोधक

१६-- हवा के बिना कोई नहीं जी सकता।

चिड़िया धोती समेत उड़ गई।

लड़का सड़क तक आया।

मोहन तुम्हारे नाईं सावधान है।

राजा ने अन्न के सिवा वस्त्र भी दिए।

तुझे हरिश्चंद्र ऐसा पति मिला है।

ऊपर लिखे पहले वाक्य में 'बिना' शब्द आया है जो न संज्ञा है, न क्रिया है, न सर्वनाम, न विशेषण और न क्रिया-विशेषण है। 'बिना' एक नया ही शब्द-भेद है। यह शब्द "हवा" संज्ञा का संबंध "जी सकता है" क्रिया से मिलाता है। यदि 'बिना' न कहा जाय तो "जी सकता" क्रिया से 'हवा' का कोई संबंध सूचित नहीं होता।

दूसरे वाक्य में "समेत" शब्द 'धोती' संज्ञा का संबंध "उड़ गई" क्रिया से मिलाता है। तीसरे वाक्य में 'तक' शब्द 'सड़क' संज्ञा का संबंध 'आया' क्रिया से मिलाता है। इसी प्रकार 'नाईं' 'तुम्हारे' सर्वनाम का संबंध और 'सिवा' 'अन्न' संज्ञा का संबंध अलग-अलग क्रियाओं से मिलाते हैं। अंतिम वाक्य में 'ऐसा' शब्द "हरिश्चंद्र" संज्ञा का संबंध "पति" संज्ञा के साथ सूचित करता है। बिना, समेत, तक, नाईं आदि संबंध-

सूचक कहलाते हैं ; क्योंकि ये क्रिया से संज्ञा वा सर्वनाम का संबंध सूचित करते हैं। जो शब्द संज्ञा वा सर्वनाम का संबंध क्रिया से अथवा दूसरे शब्द-भेद के साथ सूचित करता है उसे संबंध-सूचक कहते हैं।

२०—संबंध-सूचक अकेला आकर कोई अर्थ सूचित नहीं कर सकता, किंतु संज्ञा वा सर्वनाम के साथ आकर सार्थक होता है। अकेला 'तक' या 'समेत' कहने से कोई अर्थ सूचित नहीं होता परंतु "घर तक" वा "लड़के समेत" कहने से अर्थ निकलता है।

२१—ने, को, से, का, के, की, में और पर भी संबंध-सूचक हैं ; पर ये कारकों के चिह्न होने के कारण अलग शब्द नहीं माने जाते।

२२—क्रिया-विशेषण और संबंध-सूचक में यह अंतर है कि क्रिया-विशेषण किसी संज्ञा के साथ वा सर्वनाम के साथ संबंध नहीं रखता और अकेला ही क्रिया की विशेषता बताता है ; परंतु संबंध-सूचक संज्ञा वा सर्वनाम के साथ आकर क्रिया से संबंध रखता है।

अभ्यास

नीचे लिखे वाक्यों में संबंध-सूचक बताओ—ऋतु के अनुसार कपड़े पहिनो। मंत्री के द्वारा राजा को भेंट हुई। उसने अनाज के लिये रुपया लिया। घर के सामने एक पेड़ है। लड़का भूख के मारे मर गया। हरिश्चंद्र अपनी प्रजा-सहित वैकुंठ को गए। वह मनुष्य रात भर

जागा। मेरे पास एक घड़ी है। धन की अपेक्षा विद्या श्रेष्ठ है।

(ख) नीचे लिखे वाक्यों में उपयुक्त संबंध-सूचक लगाओ,—यह काम तुम्हारी सहायता.... न होगा। मोटा आदमी दुबले आदमी की.... आसानी से तैर सकता है। भोज....दूसरा राजा नहीं हुआ। बंदर पेड़ के....बैठा है। प्यास के....मेरा जी घबराता है। राजा अपने परिवार के....तीथ को गया।

(ग) नीचे लिखे संबंध-सूचकों का उपयोग एक-एक वाक्य में करो—लगभग, आरपार, सहारे, अनुसार, आगे, लेखे, जरिए।

२३—हवा चली और पानी गिरा।

मेरा भाई यहाँ आवेगा या मैं ही उसके पास जाऊँगा।

लड़कों ने सब धरती खोद डाली, पर कुछ न पाया।

राजा ने कहा कि इस ब्राह्मण को दान दिया जावे।

गर्म हवा ऊपर उठती है, क्योंकि वह ठंढी हवा से हलकी होती है।

ऊपर दो दो वाक्य मिलाकर लिखे गए हैं और प्रत्येक जोड़े में वाक्यों को मिलानेवाला एक शब्द आया है। पहले दो वाक्य—हवा चली, पानी गिरा "और" शब्द के द्वारा जोड़े गए हैं। दूसरे जोड़े के दोनों वाक्य "या" शब्द से जोड़े गए हैं। तीसरे जोड़े के दोनों वाक्यों को "पर" शब्द जोड़ता है। इसी तरह चौथे में "कि" और पाँचवें जोड़े में "क्योंकि" शब्द दो दो वाक्यों को जोड़ते हैं। और, या, पर, कि, क्योंकि समुच्चय-बोधक कहलाते हैं; क्योंकि ये एक

वाक्य का संबंध दूसरे वाक्य से मिलाते हैं। जो शब्द एक वाक्य को दूसरे वाक्य से जोड़ता है उसे समुच्चय-बोधक कहते हैं।

२४—कोई-कोई समुच्चय-बोधक जोड़े से आते हैं और प्रत्येक वाक्य के साथ एक समुच्चय-बोधक रहता है। जैसे—

यदि—तो—

यदि ठंढ न लगे तो यह हवा बहुत दूर तक चली जाती है।

यद्यपि—तो भी—

यद्यपि लड़का छोटा है तो भी वह सब काम कर लेता है।

चाहे—चाहे

चाहे तुम वहाँ काम करो चाहे घर को जाओ।

२५—संबंध-सूचक और समुच्चय-बोधक में यह अंतर है कि संबंध-सूचक किसी एक शब्द को दूसरे शब्द (क्रिया) से मिलाता है; पर समुच्चय-बोधक एक वाक्य को दूसरे वाक्य से मिलाता है।

संबंध-सूचक और समुच्चय-बोधक का मिलान

संबंध-सूचक	समुच्चय-बोधक
राम के पास पुस्तक है	राम आया और वह पुस्तक लाया
बूढ़ा लाठी के सहारे चलता था	मनुष्य बूढ़ा था इसलिये वह लाठी के सहारे चलता था
धन के बिना कोई काम नहीं होता	धन बहुत आवश्यक है क्योंकि उसके बिना कोई काम नहीं होता

अभ्यास

(क) नीचे लिखे वाक्यों में समुच्चय-बोधक बताओ,—पक्षी हवा में उड़ते हैं, क्योंकि उनके पंख होते हैं। लड़का सुशील है, पर वह असत्य बोलता है। घड़े में पानी कम था, इसलिये कौआ पानी न पी सका। रोग हटा है, पर अभी शरीर में बल नहीं है। मनुष्यों को चाहिए कि वे मिहनत करें। जो अब मैं क्रोध करता हूँ तो काम बिगड़ेगा। चाहे सब माल जाता रहे, पर धर्म रहे।

(ख) नीचे लिखे वाक्यों को समुच्चय-बोधकों द्वारा जोड़ो—आहट से सिंह चौंक पड़ा—उसका पंजा चूहे पर पड़ गया। मोहन लिखना-पढ़ना जानता था—एक महाजन ने उसे गुमश्ता बना लिया। तुम सबेरे न उठोगे—ऐसा आनंद कहाँ मिलेगा। ये मक्खियाँ भूख से मर गईं—उन्होंने खुले दिनों में बरसात की फिकर नहीं की। कालिदास उज्जैन में रहते थे—उनकी जन्मभूमि काश्मीर में थी। पंडित ने कहा—हम आप का दुःख दूर कर सकते हैं।

(ग) नीचे लिखे समुच्चय-बोधकों का प्रयोग दो-दो वाक्यों में करो—अथवा, इसलिये, किंतु, तथा, यद्यपि—तो भी, न - न, या—या।

पाठ—८

विस्मयादि-बोधक

२६—हाय! मेरा धन कहाँ गया।

अरे! तुम आज ही चले।

छिः! उसे मत छुओ।

आहा! कैसा सुंदर खिलौना है।

ऊपर के वाक्यों में कुछ शब्द ऐसे आए हैं जिनसे मनुष्य के मन की दशा सूचित होती है। पहले वाक्य में

'हाय !' शब्द से दुःख प्रगट होता है। दूसरे वाक्य में 'अरे !' शब्द से आश्चर्य का बोध होता है। आगे के वाक्यों में 'छिः' से घृणा और 'आहा !' से आनंद पाया जाता है। हाय, अरे, छिः और आहा शब्दों को विस्मयादि-बोधक कहते हैं ; क्योंकि इन शब्दों से विस्मय (आश्चर्य) तथा मनोविकार सूचित होते हैं। जिस शब्द से मनोविकार सूचित होता है उसे विस्मयादि-बोधक कहते हैं।

२७- विस्मयादि-बोधक और दूसरे शब्द-भेदों में यह अंतर है कि वाक्यों में दूसरे शब्द-भेदों का संबंध किसी एक शब्द से होता है, पर विस्मयादि-बोधक का संबंध किसी दूसरे शब्द से नहीं होता।

२८—अलग-अलग मनोविकार सूचित करने के लिये अलग-अलग प्रकार के शब्द आते हैं; जैसे—

आनंद—अहा ! वाह वा ! धन्य ! शाबाश !

दुःख—हाय ! अरे रे ! ऊः !

अचरज—वाह ! ओ हो ! एँ !

धिक्कार—छिः ! चुप !

पुकारना—अजी, अरे, हे, हो।

अभ्यास

(क) नीचे लिखे वाक्यों में विस्मयादि-बोधक बताओ—हैं ! लड़के ने सब फल खा लिए। वाह ! नौकर ने कुछ भी काम न किया। अरे ! यह कपड़ा कितना मैला है। चुप ! उसका नाम

मत लो। ओहो! राजा लड़ाई में जीत गया। हाय! मेरा हृदय फटा जाता है।

(ख) नीचे लिखे विस्मयादि-बोधकों का उपयोग एक एक वाक्य में करो—वाह, ऊँह, हट, धन्य, छिः।

पाठ—६

सहज पद-परिचय (व्याख्या)

२६—वाक्य के प्रत्येक शब्द का कारण-सहित शब्द-भेद बताना सहज पद-परिचय (व्याख्या) करना कहलाता है।

३०—पद-परिचय का उदाहरण—

वाक्य—अरे! सूरज डूब गया और तुम अभी इसी गाँव के पास फिरते हो!

अरे—विस्मयादि-बोधक है, क्योंकि यह मनोविकार सूचित करता है।

सूरज—संज्ञा है, क्योंकि यह वस्तु का नाम है यह शब्द 'डूब गया' क्रिया का उद्देश और कर्त्ता है।

डूब गया—क्रिया है, क्योंकि इस शब्द के द्वारा हम 'सूरज' उद्देश के विषय में कहते हैं। यह क्रिया अकर्मक है क्योंकि इसका फल केवल 'सूरज' कर्त्ता पर पड़ता है।

और—समुच्चय-बोधक है, यह दो वाक्यों को जोड़ता है—(१) सूरज डूब गया। (२) तुम अभी इसी गाँव के पास फिरते हो।

तुम सर्वनाम है; क्योंकि यह सुननेवाले के नाम के बदले आया है। यह शब्द 'फिरते हो' क्रिया का उद्देश और कर्त्ता है।

अभी—क्रिया-विशेषण है, क्योंकि यह 'फिरते हो' क्रिया की विशेषता बताता है।

इसी—विशेषण है, क्योंकि यह 'गाँव' संज्ञा की विशेषता बताता है।

गाँव—संज्ञा है, क्योंकि यह वस्तु का नाम सूचित करता है।

के—संबंध-सूचक है, यह 'गाँव' संज्ञा का संबंध 'पास' संबंध-सूचक से मिलता है।

पास—संबंध-सूचक है, क्योंकि यह 'गाँव' संज्ञा का संबंध 'फिरते हो' क्रिया से मिलाता है।

फिरते हो—क्रिया है, क्योंकि यह 'तुम' उद्देश के विषय में कुछ कहता है। यह क्रिया अकर्मक है, क्योंकि इसका फल केवल 'तुम' उद्देश पर पड़ता है।

अभ्यास

नीचे लिखे वाक्यों का पद-परिचय कहो,—घड़े का मुँह छोटा था। पक्षी अनोखी बोलियाँ बोल रहे हैं। किसी मनुष्य को कुत्ते ने काटा। दीनों को मत सताओ। मैंने उसके हाथ रुपया भेजा। राजा ने न जाना कि यह मेरा ही पुत्र है। न उन्हें नींद आती थी, न भूख-प्यास लगती थी। मनुष्य पहले वनचर था।

पाठ--१०

विकारी और अविकारी शब्द

३१—लड़का किताब पढ़ता है।
लड़के ने किताबें पढ़ीं।
छोटा लड़का किताब पढ़ता था।
छोटी लड़की किताबों को पढ़ेगी।

ऊपर के वाक्यों में एक ही शब्द अलग अलग रूपों में आया है। पहले पहले वाक्य में जो "लड़का" शब्द है उसका रूप दूसरे वाक्य में "लड़के ने" और चौथे वाक्य में "लड़की" हो गया है। पहले वाक्य का "किताब" शब्द दूसरे वाक्य में "किताबें" और चौथे वाक्य में "किताबों को" हो गया है। इसी प्रकार तीसरे वाक्य में जो "छोटा" शब्द है उसका रूप चौथे वाक्य में "छोटी" हुआ है। "पढ़ता है" शब्द "पढ़ो", "पढ़ता था" और "पढ़ेगी" रूपों में पाया जाता है। अलग-अलग अर्थ बताने के लिये कुछ शब्द-भेदों को कई रूपों में लिखना पड़ता है। "किताब" संज्ञा से एक पुस्तक का बोध होता है, पर "किताबें" कहने से एक से अधिक किताबें सूचित होती हैं। इसी प्रकार "पढ़ता है" क्रिया से बोलने के समय का ज्ञान होता है, परंतु "पढ़ता था" कहने से बीते हुए समय और अधूरे काम का अर्थ पाया जाता है। "किताब", "छोटा" और "पढ़ता है" शब्दों को विकारी शब्द

कहते हैं, क्योंकि इनके रूप में विकार (हेर-फेर) हो जाता है। अलग-अलग अर्थ सूचित करने के लिये जिस शब्द के रूप में विकार होता है उसे विकारी शब्द कहते हैं।

३२ संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण और क्रिया विकारी शब्द हैं, क्योंकि इनके रूपों में विकार होता है; जैसे -

संज्ञा लड़का, लड़के, लड़कों, लड़की, लड़कपन।

सर्वनाम – मैं, मुझे, मेरा।

विशेषण छोटा, छोटे, छोटी।

क्रिया देखना, देखता, देखा, देखकर।

३३ लड़का अचानक आया।

लड़के अचानक आए।

बड़े लड़के के साथ वह आया।

बड़ी लड़की के साथ वे आए।

लड़का आया, परंतु लड़की नहीं आई।

यदि लड़के आवेंगे, तो लड़की नहीं आवेगी।

हाय! बेचारा लड़का रोता है।

हाय! बेचारी लड़की रोती है।

ऊपर के वाक्यों में संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण और क्रिया के रूपों में विकार हुआ है, "अचानक", "साथ", "परंतु" और "हाय" शब्द एक ही रूप में हैं---अर्थात् इनके रूप में कोई विकार नहीं हुआ। "परंतु", "अचानक", "साथ" और "हाय" शब्द अविकारी शब्द कहलाते हैं; क्योंकि इनके

रूप में विकार नहीं होता। जिस शब्द के रूप में कोई विकार नहीं होता उसे अविकारी शब्द अथवा अव्यय कहते हैं।

३४ क्रिया-विशेषण, संबंध-सूचक, समुच्चय-बोधक और विस्मयादि-बोधक अव्यय कहलाते हैं; क्योंकि इनके रूप में बहुधा कोई विकार नहीं होता, अर्थात् इनका रूप प्रायः सदैव एक सा रहता है।

अभ्यास

नीचे लिखे वाक्यों में कारण दिखाकर विकारी और अव्यय शब्द बताओ,—लड़के घर के बाहर खेलते हैं; पर लड़कियाँ घरों में खेलती हैं। छोटा लड़का पाठशाला में पढ़ता था। जो लड़के छोटे हैं वे पाठशालाओं में पढ़ते हैं। यद्यपि हम गाँव में रहते हैं तो भी हमारा घर शहर में है। गाँवों में सदा सब चीजें नहीं मिलतीं, इसलिये गाँववाले शहरों से प्रायः सभी चीजें ले जाते हैं। आप अपनी किताबें कहाँ ले जायँगे? उसने उनसे कहा कि मैं इन किताबों को आपके पास रख दूँगा। लड़की के पास एक छोटी घड़ी है। घड़ियाँ शहरों में मिलती हैं।

पाठ—११

लिंग

३५—लड़का—लड़की
ऊँट—ऊँटनी

चौबे-चौबाइन
काका—काकी

ऊपर लिखी संज्ञाओं की जोड़ियों में पहली संज्ञा पुरुष जाति का बोध कराती है और दूसरी स्त्री जाति का। पहली जोड़ी के शब्द में "लड़का" संज्ञा से पुरुष जाति समझी जाती है और "लड़की" संज्ञा से स्त्री जाति सूचित होती है। दूसरी जोड़ी के शब्दों से "ऊँट" संज्ञा पुरुष (नर) की वाचक है और "ऊँटनी" संज्ञा स्त्री (मादा) का अर्थ बताती है। इसी प्रकार "चौबे" और "काका" संज्ञाएँ पुरुष-बोधक तथा "चौबाइन" और "काकी" संज्ञाएँ स्त्री-बोधक हैं। बहुधा पुरुष-बोधक संज्ञा का रूप बदलकर स्त्री-बोधक संज्ञा बना लेते हैं। "लड़का" संज्ञा में 'ई' लगाने से "लड़की" संज्ञा बनी है। "ऊँट" संज्ञा में 'नी' जोड़ने से "ऊँटनी" संज्ञा बनाई गई है। इसी प्रकार "चौबे" और "काका" संज्ञाओं का रूप तदलकर "चौबाइन" और "काकी" संज्ञाएँ बनी हैं। हम संज्ञाओं का रूप और अर्थ देखकर जान सकते हैं कि संज्ञा पुरुष-बोधक है वा स्त्री-बोधक - अर्थात् संज्ञाओं के अर्थ और रूप से हमें उनके जोड़े का ज्ञान होता है। जोड़ा सूचित करने के लिये संज्ञा के रूप में बहुधा विकार होता है। संज्ञा के जिस रूप से जोड़े का ज्ञान होता है उसे लिंग कहते हैं।*

३६ हिंदी भाषा में दो लिंग हैं--(१) पुँलिंग।
(२) स्त्रीलिंग।

---

* संज्ञाओं का रूप लिंग, वचन और कारक के कारण बदलता है।

(१) संज्ञा के जिस रूप से पुरुष का बोध होता है उसे पुँलिंग कहते हैं, जैसे, लड़का, देव इत्यादि ।

(२) संज्ञा के जिस रूप से स्त्री का बोध होता है, उसे स्त्रीलिंग कहते हैं, जैसे, लड़की, घोड़ी, देवी इत्यादि ।

३७ प्राणियों में जोड़ा रहता है ; परंतु निर्जीव पदार्थों में जोड़ा नहीं होता , इसलिये इनमें बहुधा बड़े-छोटे के विचार से जोड़ा मान लिया जाता है; जैसे, नगर, पुर, घंटा, फोड़ा पुँलिंग है और नगरी, पुरी, घंटी, फुड़ियाँ स्त्रीलिंग हैं ।

३८ अप्राणीवाचक संज्ञाओं का लिंग जानना कठिन है , क्योंकि उनसे जोड़े का ज्ञान नहीं होता । उनका लिंग जानने के लिये कुछ नियम हैं जो यहाँ दिए जाते हैं ।

(क) नीचे लिखी संज्ञाएँ बहुधा पुलिंग होती हैं---

*(१) अकारांत संज्ञाएँ ; जैसे, घर, पेड़, हाथ, सिर ।

(२) आकारांत संज्ञाएँ; जैसे, कपड़ा, जूता. पहिया गन्ना, आटा ।

(३) जिन भाववाचक † संज्ञाओं के अंत में आव पन पा, वा त्व होता है; जैसे, जमाव, लड़कपन, बुढ़ापा, दासत्व ।

---

* जिसके अंत में 'अ' रहता है ।

† भाववाचक संज्ञा उस संज्ञा को कहते हैं जो किसी प्राणी या पदार्थ के गुण, स्वभाव अथवा व्यापार का नाम सूचित करती है । जैसे, बल, बुद्धि, क्रोध, रोग, नींद, चाल इत्यादि ।

(ख) नीचे लिखी संज्ञाएँ बहुधा स्त्रीलिंग होती हैं

(१) ईकारांत संज्ञाएँ; जैसे—टोपी, धोती नाली, घड़ी, स्याही।

(२) ऊकारांत संज्ञाएँ; जैसे, ब्यालू, गेरू, झाड़ू, लू।

(३) तकारांत संज्ञाएँ; जैसे, बात, रात, लात, छत. कसरत, दावात।

(४) ताकारांत भाववाचक संज्ञाएँ; जैसे, मित्रता, दुष्टता, सुंदरता, स्वच्छता, वीरता, दरिद्रता, नम्रता।

(५) जिन भाववाचक संज्ञाओं के अंत में वट वा हट हो; जैसे, सजावट, मिलावट, घबराहट, चिकनाहट।

३६—पुँल्लिंग संज्ञाओं से स्त्रीलिंग संज्ञाएँ बनाई जाती हैं जिसके कुछ नियम ये हैं—

(१) कई एक अकारांत वा आकारांत संज्ञाओं के अंत्य स्वर के बदले 'ई' कर देते हैं; जैसे,

पुँल्लिंग	स्त्रीलिंग
देव	देवी
दास	दासी
काका	काकी
नाना	नानी

(२) उपनामवाचक संज्ञाओं के अंत्य स्वर के बदले "आइन" लगाते हैं; जैसे,

पुँल्लिंग	स्त्रीलिंग
पाँड़े	पँड़ाइन
चौबे	चौबाइन
ठाकुर	ठकुराइन
बाबू	बबुआइन
लाला	ललाइन

(३) जातियों के नामों के अंत में बहुधा "इन" लगाया जाता है; जैसे,

सुनार	सुनारिन
लुहार	लुहारिन
तेली	तेलिन
धोबी	धोबिन
कुँजड़ा	कुँजड़िन

(४) कुछ पशु-पक्षियों के नामों के अंत में "नी" लगाते हैं; जैसे,

ऊँट	ऊँटनी
मोर	मोरनी
हाथी	हथिनी
सिंह	सिंहनी
हंस	हंसनी

(५) कुछ पुँलिंग शब्दों के स्त्रीलिंग शब्द दूसरे ही होते हैं; जैसे,

पुंलिंग	स्त्रीलिंग
राजा	रानी
बैल	गाय
भाई	बहिन
पिता	माता
पुरुष	स्त्री
पुत्र	कन्या

अभ्यास

(क) निम्नलिखित संज्ञाओं का लिंग कारण सहित बताओ—लड़का, बैल, भैंस, रानी, काका, घर, ताला, शीघ्रता, बड़प्पन, टोपी, भाई।

(ख) नीचे लिखी संज्ञाओं के स्त्रीलिंग के रूप बताओ—भानजा, मामा, माली, ससुर, पुत्र, शेर, बाघ, हरिण, सियार, रीछ।

पाठ—१२

वचन

लड़का	लड़के
घड़ा	घड़े
गाय	गाएँ
बेटी	बेटियाँ
नाली	नालियाँ

ऊपर एक एक संज्ञा के दो दो रूप दिए गए हैं। पहले रूप से एक पदार्थ का बोध होता है और दूसरे रूप से अधिक

पदार्थ सूचित होते हैं। लड़का, घड़ा, गाय, बेटी और नाली कहने से एक एक पदार्थ का बोध होता है, और लड़के घड़े, गाएँ, बेटियाँ और नालियाँ संज्ञाओं से एक से अधिक पदार्थ सूचित होते हैं। संख्या सूचित करने के लिये संज्ञा के रूप में हेर फेर होता है। संज्ञा के जिस रूप से संख्या का बोध होता है उसे वचन कहते है।

४१ हिंदी में दो वचन होते हैं—(१) एकवचन और (२) बहुवचन।

(१) संज्ञा के जिस रूप से एक वस्तु का बोध होता है उसे एकवचन कहते हैं; जैसे, कपड़ा, छाता, बहिन, बोली।

(२) संज्ञा के जिस रूप से एक से अधिक वस्तुओं का बोध होता है उसे बहुवचन कहते हैं; जैसे, कपड़े, छाते, बहिनें, बोलियाँ।

४२—संज्ञाओं के बहुवचन के दो रूप होते हैं—(१) विभक्ति-रहित, (२) विभक्ति-सहित।

(१) जब बहुवचन के रूप के साथ ने, को, से आदि विभक्तियाँ नहीं रहतीं तब वह विभक्ति-रहित रूप कहलाता है; जैसे लड़के, घड़ियाँ, किताबें।

(२) जब बहुवचन के रूप के साथ विभक्तियाँ आती हैं, तब उसे विभक्ति-सहित रूप कहते हैं; जैसे, लड़कों ने, घड़ियों को, किताबों से, राजाओं का।

४३—विभक्ति-रहित बहुवचन बनाने के नियम ये हैं—

(१) आकारांत पुँल्लिंग शब्दों को छोड़ शेष पुँल्लिंग शब्दों का रूप दोनों वचनों में एक ही रहता है; जैसे,

एकवचन	बहुवचन
बालक आया।	बालक आए।
एक मुनि गया।	कई मुनि गए।
वह माली सोता है।	वे माली सोते हैं।
बुड्ढा साधु बैठा है।	बुड्ढे साधु बैठे हैं।

(२) आकारांत पुँल्लिंग संज्ञाओं के अंत्य आ को ए करके बहुवचन बनाते हैं; जैसे, लड़का— लड़के, घड़ा— घड़े, लोटा— लोटे, टुकड़ा— टुकड़े।

अपवाद*— राजा, पिता, काका, मामा आदि शब्द दोनों वचनों में एक से रहते हैं; जैसे, राजा आया, राजा आए, एक काका, कई काका।

(३) अकारांत स्त्रीलिंग संज्ञाओं के अंत्य अ को एँ करके बहुवचन बनाते हैं; जैसे, बहिन बहिनें, बात बातें, आँख आँखें, झील झीलें।

(४) इकारांत और ईकारांत संज्ञाओं में "ई" को "इ" करके अंत्य स्वर के पश्चात् याँ जोड़कर बहुवचन बनाते हैं; जैसे, तिथि तिथियाँ, राशि राशियाँ, टोपी टोपियाँ, घड़ी घड़ियाँ, देवी देवियाँ।

---

* जो शब्द नियम के विरुद्ध होते हैं वे अपवाद कहाते हैं।

(५) शेष स्त्रीलिंग शब्दों के पश्चात् एँ जोड़कर बहुवचन बनाया जाता है; पर दीर्घ ऊ को ह्रस्व कर देते हैं। जैसे माला—मलाएँ, कथा—कथाएँ, धातु—धातुएँ, वस्तु—वस्तुएँ, झाड़ू—झाड़ुएँ बहू—बहुएँ।

(६) कभी कभी बहुवचन बनाने के लिये 'गण', 'जाति', 'लोग', 'जन' और 'वर्ग' शब्द लगाए जाते हैं; जैसे, बालकगण, मनुष्यजाति, राजालोग, साधुजन, मित्रवर्ग।

सूचना—विभक्ति-सहित बहुवचन बनाने के नियम अगले अध्याय में दिए जायँगे।

अभ्यास

(क) नीचे लिखी संज्ञाओं का वचन बताओ—बालक, लड़के, गुरुजन, नालियां, रातें, कपड़ा, चिट्ठी, माता, डाकू, चौबे, दावात।

(ख) नीचे लिखी संज्ञाओं का विभक्ति-रहित बहुवचन बनाओ—पिता, राजा, माली, लोटा, पुस्तक, घड़ी, बहू, साधु, रीति, रात।

पाठ—१३

कारक

४४—लड़के ने अपनी पुस्तक संदूक में रखी। इस वाक्य में सात शब्द हैं जिनमें से ने और में संबंध-सूचक हैं। "ने" "लड़के" संज्ञा का संबंध और "में" "संदूक" संज्ञा का संबंध "रखी" क्रिया से मिलाता है। "लड़के ने" संज्ञा "रखी"

क्रिया का कर्त्ता और "संदूक में" संज्ञा "रखी" क्रिया का स्थान सूचित करती है। ये संबंध सूचित करने के लिये "लड़का" संज्ञा का रूप "लड़के ने" और "संदूक" संज्ञा का रूप "संदूक में" हो गया है। बदले हुए रूपों से इन दोनों संज्ञाओं का संबंध क्रिया से मिलता है। 'अपनी' सर्वनाम का संबंध "पुस्तक" संज्ञा से है और "अपनी" शब्द "आप" सर्वनाम का बदला हुआ रूप है। इसी प्रकार "पुस्तक" संज्ञा का संबंध "रखी" क्रिया से है, क्योंकि इस क्रिया का बल "पुस्तक" संज्ञा पर पड़ता है। "पुस्तक" संज्ञा का भी रूप बदला है, क्योंकि वह असल में "पुस्तक को" है, पर "को" का लोप हो गया है। वाक्य में संज्ञा और सर्वनाम का संबंध दूसरे शब्दों से रहता है और यह संबंध बताने के लिये संज्ञा और सर्वनाम का रूप बदल जाता है। संज्ञा वा सर्वनाम के जिस रूप से उसका संबंध क्रिया से अथवा दूसरे शब्द के साथ प्रकाशित होता है उसे कारक कहते हैं। ने, को, में आदि संबंध-सूचक कारक के चिह्न हैं और उनको विभक्ति कहते हैं।

४५—कारक आठ हैं—कर्त्ता कारक, कर्म कारक, करण कारक, संप्रदान कारक, अपादान कारक, संबंध कारक, अधिकरण कारक और संबोधन कारक।

(१) कर्त्ता कारक—संज्ञा वा सर्वनाम के उस रूप को कहते हैं जिससे काम के करनेवाले का अथवा उद्देश का बोध

होता है; जैसे, लड़का दौड़ता है, चिट्ठी आई, नौकर ने कोड़ा झाड़ा, लड़के बुलाए गए।

(क) कर्त्ता कारक की विभक्ति 'ने' है जो केवल सकर्मक क्रिया के सामान्यभूत काल और उससे बने कालों के साथ संज्ञा वा सर्वनाम में लगाई जाती है;[1] जैसे, किसान ने खेत में बीज बोया। लड़की ने रोटी बनाई थी। बोलना, भूलना, बकना और लाना सकर्मक क्रियाओं के साथ कर्त्ता में 'ने' चिह्न नहीं लगाया जाता; जैसे, मोहन सच बोला, लड़की पाठ भूली थी, नौकर चिट्ठी लाया है।

(२) जिस वस्तु पर क्रिया का फल पड़ता है उसे सूचित करनेवाली संज्ञा वा सर्वनाम के रूप को कर्म कारक कहते हैं; जैसे, लड़का पत्थर फेंकता है, मालिक ने नौकर को बुलाया, हम चिट्ठी लिखेंगे।

(क) कर्म कारक का चिह्न "को" है जो बहुधा प्राणीवाचक शब्दों में लगाया जाता है; जैसे सिपाही चोर को पकड़ता है, वे हमको खोजते थे।

(३) करण कारक संज्ञा के उस रूप को कहते हैं जिससे क्रिया के साधन (उपाय) का बोध होता है; जैसे, हम आँखों से देखते हैं, सिपाही ने चोर को रस्सी से बाँधा, कुम्हार मिट्टी से घड़ा बनाता है।

(क) करण का चिह्न 'से' है।

---

[1] आगे देखो।

(४) जिस वस्तु के लिये कोई काम किया जाता है उसे सूचित करनेवाली संज्ञा वा सर्वनाम का रूप संप्रदान कारक कहलाता है; जैसे, राजा ने ब्राह्मण को धन दिया, शिक्षक विद्यार्थी को कहानी सुनाता है, रसोई के लिये सामान लाओ।

(क) संप्रदान कारक का चिह्न 'को' वा 'के लिये' है।

(५) अपादान कारक संज्ञा का वह रूप है जिससे क्रिया के अलग होने की सीमा सूचित होती है; जैसे पेड़ से पत्ते गिरे, गंगा हिमालय से निकलती है, हाथ से छड़ी छूट पड़ी।

(क) अपादान कारक का चिह्न 'से' है।

(६) संज्ञा के जिस रूप से एक वस्तु पर दूसरी का अधिकार सूचित होता है उसे संबंध कारक कहते हैं; जैसे, राजा का महल, लड़के की पुस्तक, पत्थर के टुकड़े।

(क) संबंध कारक की विभक्तियाँ 'का-के-की' हैं जो संबंधी शब्द के लिंग, वचन और कारक के कारण बदलती हैं। यदि संबंधी शब्द पुंलिंग और बहुवचन में हो अथवा विभक्ति या संबंधसूचक के साथ आया हो तो संबंध कारक का चिह्न 'के' आता है। यदि संबंधी शब्द स्त्रीलिंग हो तो संबंध कारक में 'की' विभक्ति लगाई जाती है। जैसे, ब्राह्मण के लड़के वेद पढ़ते हैं, राजा के मंत्री ने यज्ञ किया, सिपाही लड़के के भाई सहित आया, छड़ी में चाँदी की मूठ लगी है।

(७) संज्ञा के उस रूप को अधिकरण कारक कहते हैं जिससे क्रिया का आधार सूचित होता है; जैसे, सिंह वन में

रहता है, मछलियाँ पानी में तैरती हैं, बंदर पेड़ पर उछल रहे हैं।

(क) अधिकरण के चिह्न 'में' और 'पर' हैं। जब कोई वस्तु आधार के भीतरी भाग से मिलती है। तब अधिकरण कारक में 'में' का प्रयोग होता है; और जब केवल बाहरी भाग से मेल रखती है तब 'पर' लगाया जाता है; जैसे, बगीचे में, पेड़ पर।

(८) संबोधन कारक संज्ञा के उस रूप को कहते हैं जिससे किसी को चेताना अथवा पुकारना सूचित होता है; जैसे, हे नाथ, मुझ पर दया करो; अरे लड़के, इधर आ।

(क) संबोधन कारक की कोई विभक्ति नहीं है। कभी-कभी इसके पूर्व हे, अरे, आदि विस्मयादि-बोधक अव्यय लगा दिए जाते हैं।

अभ्यास

(क) नीचे लिखे वाक्यों में संज्ञाओं के कारक बताओ—सबेरे ठंडी हवा चलती है। हाय! बेचारी स्त्री भूख से मर गई। घड़े का मुँह छोटा था। यह काम लड़की न कर सकेगी। लड़के ने सड़क पर एक रुपया पाया। संदूक में कपड़े रख दो। बिना पानी के कोई जीवधारी नहीं जी सकता।

(ख) नीचे लिखी संज्ञाओं का उपयोग अलग अलग कारक में करके एक एक वाक्य बनाओ—कुत्ता, फूल, नदी, भाई, मित्र, रीति, बल।

संज्ञा की कारक-रचना

४६ वचनों और कारकों के अनुसार संज्ञा के रूप बताने को कारक-रचना कहते हैं।

४७ आकारांत पुंल्लिंग संज्ञाओं के एकवचन में विभक्ति के पूर्व 'आ' के स्थान में 'ए' हो जाता है; जैसे, लड़के ने, घोड़े को, कपड़े में, हे अंधे।

अपवाद राजा, पिता, काका, नाना, आदि संज्ञाओं में आ के स्थान में ए नहीं होता: जैसे राजा ने, काका को, पिता से, हे मामा।

४८ संज्ञा का विभक्ति-सहित बहुवचन बनाने के नियम ये हैं

(१) अकारांत और विकारी आकारांत संज्ञाओं के अंत्य स्वर के स्थान में ओं लगाया जाता है; जैसे, बालकों ने, लड़कों को, भैंसों से, फुड़ियों में।

(२) ईकारांत संज्ञाओं में अंत्य स्वर को ह्रस्व कर उसके पश्चात् यों जोड़ते हैं; जैसे मुनियों ने, हाथियों को, शक्तियों से, नदियों में।

(३) शेष शब्दों में अंत्य स्वर के पश्चात् ओं जोड़ा जाता है; पर दीर्घ ऊ को ह्रस्व कर देते हैं; जैसे, राजाओं ने, माताओं को, साधुओं से, डाकुओं का, धेनुओं में, दुबेओं का।

(४) संबोधन कारक के बहुवचन में ओं और यों का अनुस्वार निकाल दिया जाता है ; जैसे, हे मित्रो, राजाओ मुनियो, देवियो।

४६ अब कई एक संज्ञाओं की कारक-रचना लिखी जाती है

अकारांत पुँल्लिंग संज्ञा—बालक

	एकवचन	बहुवचन
कर्त्ता	बालक	बालक
	बालक ने	बालकों ने
कर्म	बालक को	बालकों को
करण	बालक से	बालकों से
संप्रदान	बालक को	बालकों को
	बालक के लिये	बालकों के लिये
अपादान	बालक से	बालकों से
संबंध	बालक का-के-की	बालकों का-के-की
अधिकरण	बालक में	बालकों में
	बालक पर	बालकों पर
संबोधन	हे बालक	हे बालको

अकारांत स्त्रीलिंग संज्ञा—बहिन

कर्त्ता	बहिन	बहिनें
	बहिन ने	बहिनों ने

	एकवचन	बहुवचन
कर्म	बहिन को	बहिनों को
करण	बहिन से	बहिनों से
संप्रदान	बहिन को	बहिनों को
	बहिन के लिये	बहिनों के लिये
अपादान	बहिन से	बहिनों से
संबंध	बहिन का-के-की	बहिनों का-के-की
अधिकरण	बहिन में	बहिनों में
	बहिन पर	बहिनों पर
संबोधन	हे बहिन	हे बहिनो

आकारांत पुँल्लिग संज्ञा—लड़का

कर्त्ता	लड़का	लड़के
	लड़के ने	लड़कों ने
कर्म	लड़के को	लड़कों को
करण	लड़के से	लड़कों से
संप्रदान	लड़के को	लड़कों को
	लड़के के लिये	लड़कों के लिये
अपादान	लड़के से	लड़कों से
संबंध	लड़के का-के-की	लड़कों का-के-की
अधिकरण	लड़के में	लड़कों में
	लड़के पर	लड़कों पर
संबोधन	हे लड़के	हे लड़को

आकारांत पुँल्लिंग संज्ञा—पिता

	एकवचन	बहुवचन
कर्त्ता	पिता	पिता
	पिता ने	पिताओं ने
कर्म	पिता को	पिताओं को
करण	पिता से	पिताओं से
संप्रदान	पिता को	पिताओं को
	पिता के लिये	पिताओं के लिये
अपादान	पिता से	पिताओं से
संबंध	पिता का-के-की	पिताओं का-के-की
अधिकरण	पिता में	पिताओं में
	पिता पर	पिताओं पर
संबोधन	हे पिता	हे पिताओ

आकारांत स्त्रीलिंग संज्ञा—माला

कर्त्ता	माला	मालाएँ
	माला ने	मालाओं ने
कर्म	माला को	मालाओं को
करण	माला से	मालाओं से
संप्रदान	माला को	मालाओं को
	माला के लिये	मालाओं के लिये
अपादान	माला से	मालाओं से
संबंध	माला का-के-की	मालाओं का-के-की

	एकवचन	बहुवचन
अधिकरण	माला में	मालाओं में
	माला पर	मालाओं पर
संबोधन	हे माला	हे मालाओ

इकारांत पुँल्लिंग संज्ञा—मुनि

कर्त्ता	मुनि, मुनि ने	मुनि, मुनियों ने
कर्म	मुनि को	मुनियों को
करण	मुनि से	मुनियों से
संप्रदान	मुनि को	मुनियों को
	मुनि के लिये	मुनियों के लिये
अपादान	मुनि से	मुनियों से
संबंध	मुनि का-के-की	मुनियों का-के-की
अधिकरण	मुनि में	मुनियों में
	मुनि पर	मुनियों पर
संबोधन	हे मुनि	हे मुनियो

इकारांत स्त्रीलिंग संज्ञा—तिथि

कर्त्ता	तिथि	तिथियाँ
	तिथि ने	तिथियों ने
कर्म	तिथि को	तिथियों को
करण	तिथि से	तिथियों से
संप्रदान	तिथि को	तिथियों को
	तिथि के लिये	तिथियों के लिये

अपादान	तिथि से	तिथियों से
संबंध	तिथि का-के-की	तिथियों का-के-की
अधिकरण	तिथि में	तिथियों में
	तिथि पर	तिथियों पर
संबोधन	हे तिथि	हे तिथियो

ईकारांत पुँल्लिंग संज्ञा—भाई

कर्त्ता	भाई	भाई
	भाई ने	भाइयों ने
कर्म	भाई को	भाइयों को
करण	भाई से	भाइयों से
संप्रदान	भाई को	भाइयों को
	भाई के लिये	भाइयों के लिये
अपादान	भाई से	भाइयों से
संबंध	भाई का-के-की	भाइयों का-के-की
अधिकरण	भाई में	भाइयों में
	भाई पर	भाइयों पर
संबोधन	हे भाई	हे भाइयो

ईकारांत स्त्रीलिंग संज्ञा—नदी

कर्त्ता	नदी	नदियाँ
	नदी ने	नदियों ने

	एकवचन	बहुवचन
कर्म	नदी को	नदियों को
करण	नदी से	नदियों से
संप्रदान	नदी को	नदियों को
	नदी के लिये	नदियों के लिये
अपादान	नदी से	नदियों से
संबंध	नदी का-के-की	नदियों का-के-की
अधिकरण	नदी में	नदियों में
	नदी पर	नदियों पर
संबोधन	हे नदी	हे नदियो

उकारांत पुँल्लिंग संज्ञा—साधु

कर्त्ता	साधु	साधु
	साधु ने	साधुओं ने
कर्म	साधु को	साधुओं को
करण	साधु से	साधुओं से
	साधु को	साधुओं को
	साधु के लिये	साधुओं के लिये
अपादान	साधु से	साधुओं से
संबंध	साधु का-के-की	साधुओं का-के-की
अधिकरण	साधु में	साधुओं में
संबोधन	हे साधु	हे साधुओ

उकारांत स्त्रीलिंग संज्ञा—धेनु

	एकवचन	बहुवचन
कर्त्ता	धेनु	धेनुएँ
	धेनु ने	धेनुओं ने
कर्म	धेनु को	धेनुओं को
करण	धेनु से	धेनुओं से
संप्रदान	धेनु को	धेनुओं को
	धेनु के लिये	धेनुओं के लिये
अपादान	धेनु से	धेनुओं से
संबंध	धेनु का-के-की	धेनुओं का-के-की
अधिकरण	धेनु में	धेनुओं में
	धेनु पर	धेनुओं पर
संबोधन	हे धेनु	हे धेनुओ

ऊकारांत पुंलिंग संज्ञा— डाकू

कर्त्ता	डाकू	डाकुओं
	डाकू ने	डाकुओं ने
कर्म	डाकू को	डाकुओं को
करण	डाकू से	डाकुओं से
संप्रदान	डाकू को	डाकुओं को
	डाकू के लिये	डाकुओं के लिये
अपादान	डाकू से	डाकुओं से
संबंध	डाकू का-के-की	डाकुओं का-के-की

	एकवचन	बहुवचन
अधिकरण	डाकू में	डाकुओं में
	डाकू पर	डाकुओं पर
संबोधन	हे डाकू	हे डाकुओ

ऊकारांत स्त्रीलिंग संज्ञा—बहू

कर्त्ता	बहू	बहुएँ
	बहू ने	बहुओं ने
कर्म	बहू को	बहुओं को
करण	बहू से	बहुओं से
संप्रदान	बहू को	बहुओं को
	बहू के लिये	बहुओं के लिये
अपादान	बहू से	बहुओं से
संबंध	बहू का-के-की	बहुओं का-के-की
अधिकरण	बहू में	बहुओं में
	बहू पर	बहुओं पर
संबोधन	हे बहू	हे बहुओ

एकारांत पुँल्लिंग संज्ञा—चौबे

कर्त्ता	चौबे	चौबे
	चौबे ने	चौबेओं ने
कर्म	चौबे को	चौबेओं को
करण	चौबों से	चौबेओं से

	एकवचन	बहुवचन
संप्रदान	चौबे को	चौबेओं को
	चौबे के लिये	चबेओं के लिये
अपादान	चौबे से	चौबेओं से
संबंध	चौबे का-के-की	चोबेओं का-के-की
अधिकरण	चौबे में	चौबेओं में
	चौबे पर	चौबेओं पर
संबोधन	हे चौबे	हे चौबेओ

अभ्यास

नीचे लिखे शब्दों की कारक-रचना करो—देव, माली, भालू, चिंता, गुरु, आलू, नगरी, भावज, मामा, बच्चा।

पाठ—१४

सर्वनामों की कारक-रचना

५०—सर्वनामों में लिंग के कारण कोई विकार नहीं होता; जैसे मैं शब्द स्त्री अथवा पुरुष के लिये आता है। इसी प्रकार "वह" से स्त्री अथवा पुरुष का बोध होता है।

५१—जिस संज्ञा के स्थान में सर्वनाम आता है उसी के अनुसार इसका लिंग माना जाता है, जैसे लड़का आया है वह बाहर खड़ा है। इस वाक्य में 'वह' पुँल्लिंग है। पर लड़की आई है, वह बाहर खड़ी है; इस वाक्य में 'वह' स्त्रीलिंग है।

५२—सर्वनामों में केवल वचन और कारक के कारण विकार होता है ; जैसे, मैं (एकवचन, कर्त्ता कारक), हम (बहुवचन, कर्त्ता कारक), मुझे (एकवचन, कर्म कारक), हमें (बहुवचन, कर्म कारक)।

५३—सर्वनामों में संबोधन कारक नहीं होता, क्योंकि जिसे पुकारते, हैं या चेताते हैं उसका प्रत्यक्ष नाम लेकर ऐसा करते हैं।

५४—जिन संज्ञाओं के बदले सर्वनाम आते हैं उनके अर्थ के अनुसार इनमें तीन पुरुष होते हैं—उत्तम पुरुष, मध्यम पुरुष और अन्य पुरुष। बोलनेवाले के नाम के बदले जो सर्वनाम आता है वह उत्तम पुरुष कहलाता है ; जैसे, मैं, हम। जिससे बात की जाती है उसके नामके बदले आनेवाले सर्वनाम को मध्यम पुरुष कहते हैं ; जैसे, तू, तुम। जिसके विषय में बात करते हैं उसके नाम के बदले आनेवाला सर्वनाम अन्य पुरुष कहा जाता है ; जैसे, वह, वे, जो कौन इत्यादि।

५५—आदर के लिये एकवचन सर्वनाम के बदले बहुवचन सर्वनाम लाते हैं, जैसे, वे आते हैं। इसलिये तू के बदले तुम बोलते हैं और अधिक आदर के लिये तुम के बदले आप बोला जाता है।

५६—आप सर्वनाम आदरसूचक होने के सिवा निज-वाचक भी है अर्थात् वह अपने-पन का बोध कराता है ; जैसे,

आप आइए (आदरसूचक), वे आप आएँगे (निजवाचक)। निजवाचक आपकी कारक-रचना केवल एकवचन में होती है।

५७ मैं, तू, यह, वह और सो को छोड़ शेष सर्वनाम विभक्ति-रहित कर्त्ता कारक के दोनों वचनों में एक ही रूप में रहते हैं ; जैसे, कौन आता है ? (एकवचन), कौन आते हैं (बहुवचन), कोई जाता है, कोई जाते हैं।

५८—मैं और तू के संबंध कारक की विभक्तियाँ रा-रे-री और निजवाचक आप के संबंध कारक की ना-ने-नी हैं, जैसे, मेरा, हमारा, तेरा, तुम्हारा, अपना।

५९—आप, कोई, क्या और कुछ सर्वनामों को छोड़ शेष सर्वनामों के कर्म और संप्रदान कारकों के एकवचन में ए और बहुवचन में एँ विभक्तियाँ भी आती हैं ; जैसे, उसे वा उसको, उन्हें वा उनको।

सर्वनामों की कारक-रचना

उत्तम पुरुष सर्वनाम—मैं

कारक	एकवचन	बहुवचन
कर्त्ता	मैं वा मैंने	हम वा हमने
कर्म	मुझको वा मुझे	हमको वा हमें
करण	मुझसे	हमसे
संप्रदान	मुझको वा मुझे मेरे लिये	हमको वा हमें हमारे लिये

कारक	एकवचन	बहुवचन
अपादान	मुझसे	हमसे
संबंध	मेरा-रे-री	हमारा-रे-री
अधिकरण	मुझमें	हममें
	मुझपर	हमपर

मध्यम पुरुष सर्वनाम—तू

कर्त्ता	तू वा तूने	तुम वा तुमने
कर्म	तुझको या तुझे	तुमको वा तुम्हें
करण	तुझसे	तुमसे
संप्रदान	तुझको, वा तुझे	तुमको वा तुम्हें
	तेरे लिये	तुम्हारे लिये
अपादान	तुझसे	तुमसे
संबंध	तेरा-रे-री	तुम्हारा-रे-री
अधिकरण	तुझमें	तुममें
	तुझ पर	तुम पर

आदरसूचक सर्वनाम—आप

कर्त्ता	आप वा आपने	आप लोग वा आप लोगों ने
कर्म	आपको	आप लोगों को
करण	आपसे	आप लोगों से
संप्रदान	आपको	आप लोगों को
	आपके लिये	आप लोगों के लिये
अपादान	आपसे	आप लोगों से

कारक	एकवचन	बहुवचन
संबंध	आपका-के-की	आप लोगों का-के-की
अधिकरण	आपमें	आप लोगों में
	आप पर	आप लोगों पर

अन्य पुरुष सर्वनाम (निकटवर्ती)—यह

कर्त्ता	यह वा इसने	ये वा इनने वा इन्होंने
कर्म	इसको वा इसे	इनको वा इन्हें
करण	इससे	इनसे वा इन्होंसे
संप्रदान	इसको वा इसे	इनको वा इन्हें
	इसके लिये	इनके लिये
अपादान	इससे	इनसे
संबंध	इसका-के-की	इनका-के-की
अधिकरण	इसमें	इनमें
	इसपर	इनपर

अन्य पुरुष सर्वनाम (दूरवर्ती)—वह

कर्त्ता	वह वा उसने	वे, उनने वा उन्होंने
कर्म	उसको वा उसे	उनको वा उन्हें
करण	उससे	उनसे
संप्रदान	उसको वा उसे	उनको वा उन्हें
	उसके लिये	उनके लिये
अपादान	उससे	उनसे
संबंध	उसका-के-की	उनका-के-की

कारक	एकवचन	बहुवचन
अधिकरण	उसमें	उनमें
	उस पर	उन पर

अनिश्चयवाचक सर्वनाम—कोई

कारक	एकवचन
कर्त्ता	कोई वा किसी ने
कर्म	किसी को
करण	किसी से
संप्रदान	किसी को
	किसी के लिये
अपादान	किसी से
संबंध	किसी का-के-की
अधिकरण	किसी में
	किसी पर

संबंधवाचक सर्वनाम—जो

कारक	एकवचन	बहुवचन
कर्त्ता	जो वा जिसने	जो वा जिनने वा जिन्होंने
कर्म	जिसको वा जिसे	जिनको वा जिन्हें
करण	जिससे	जिनसे
संप्रदान	जिसको वा जिसे	जिनको वा जिन्हें
	जिसके लिये	जिनके लिये

कारक	एकवचन	बहुवचन
अपादान	जिससे	जिनसे
संबंध	जिसका-के-की	जिनका-के-की
अधिकरण	जिसमें	जिनमें
	जिस पर	जिन पर

प्रश्नवाचक सर्वनाम—कौन

कर्त्ता	कौन वा किसने	कौन वा किनने वा किन्होंने
कर्म	किसको वा किसे	किनको वा किन्हें
करण	किससे	किनसे
संप्रदान	किसको वा किसे	किनको वा किन्हें
	किसके लिये	किनके लिये
अपादान	किससे	किनसे
संबंध	किसका-के-की	किनका-के-की
अधिकरण	किसमें	किनमें
	किस पर	किन पर

निजवाचक सर्वनाम—आप

कारक	एकवचन
कर्त्ता	आप
कर्म	अपने को
करण	अपने से
संप्रदान	अपने को
	अपने लिये

कारक	एकवचन
अपादान	अपने से
संबंध	अपना ने-नी
अधिकरण	अपने में
	अपने पर

अभ्यास

नीचे लिखे सर्वनामों की कारक-रचना लिखो—यह, कोई, कौन, मैं, वह।

पाठ—१५

विशेषण के रूपांतर

६०—विशेषण जिस संज्ञा की विशेषता बतलाता है उसे विशेष्य कहते हैं; जैसे, अच्छा लड़का। इस उदाहरण में "लड़का" संज्ञा "अच्छा" विशेषण का विशेष्य है।

६१—हिंदी में विशेष्य के अनुसार केवल आकारांत विशेषणों का रूप बदलता है और उनमें विशेष्य के लिंग, वचन और कारक के कारण विकार होता है; जैसे, छोटी लड़की. छोटे लड़के, छोटे लड़के को।

६२—जब विशेषण का प्रयोग संज्ञा के समान होता है तब उसमें अपने ही लिंग, वचन और कारक के कारण विकार होता है; जैसे, बड़ों को, भोलियों से।

६३—आकारांत विशेषणों में विकार होने के ये नियम हैं।

(१) यदि पुल्लिंग विशेष्य बहुवचन में अथवा विभक्ति या संबंध-सूचक के साथ आवे तो आकारांत विशेषण के अंत्य आ के स्थान में ए होता है; जैसे, छोटे लड़के, छोटे लड़के को, छोटे लड़के समेत।

(२) यदि विशेष्य स्त्रीलिंग हो तो आ के स्थान में ई होती है; जैसे छोटी लड़की, छोटी लड़कियाँ, छोटी लड़की को।

६४—पूर्णांक संख्यावाचक विशेषणों में समुदाय अथवा अनिश्चय के अर्थ में ओं जोड़ा जाता है; जैसे, चारों लड़के आए, पाँचों लड़कियाँ गईं, पचासों आदमी इकट्ठे हुए।

अभ्यास

नीचे लिखे वाक्यों में विशेषणों के रूपांतर का कारण बताओ—छोटा घोड़ा भागा। हाथी रस्से से बाँधा गया। बूढ़ों का आदर करो। सुंदरियों ने गीत गाए। बड़े लड़के खेल रहे हैं।

पाठ—१६

वाच्य

६५-सिपाही चिट्ठी लाता है।	चिट्ठी लाई जाती है।
लड़के ने चित्र खींचा।	चित्र खींचा गया।
लड़की रसोई बनावेगी।	रसोई बनाई जायगी।
नौकर धूप में नहीं बैठ सका।	नौकर से धूप में नहीं बैठा गया।

ऊपर बाईं ओर लिखे वाक्यों में क्रिया का कर्त्ता उनका उद्देश है अर्थात् वाक्य में कर्त्ता के विषय में कुछ कहा गया

है। दाहिनी ओर के पहले तीन वाक्यों में उसी क्रिया का उद्देश उसका कर्म है अर्थात् वाक्य में कर्म के विषय में कहा गया है। दाहिनी ओर के अंतिम वाक्य में क्रिया का उद्देश न कर्त्ता है न कर्म किंतु क्रिया का भाव (बैठना) ही उद्देश है। कर्त्ता, कर्म अथवा भाव को उद्देश बनाने के लिये क्रिया के रूप में विकार होता है; जैसे लाता है, लाया जाता है; खींचा, खींचा गया; बैठ सका, बैठा गया। क्रिया के जिस रूप से यह जाना जाता है कि क्रिया का उद्देश उसका कर्त्ता, कर्म अथवा भाव है उस रूप को वाच्य कहते हैं।

६६—क्रियाओं के वाच्य तीन हैं—

(१) कर्त्तृवाच्य (२) कर्मवाच्य (३) भाववाच्य।

(१) कर्त्तृवाच्य क्रिया के उस रूप को कहते हैं जिससे ज ना जाता है कि क्रिया का उद्देश उसका कर्त्ता है; जैसे, सिपाही आया, नौकर काम करता है, पुजारी ने कथा सुनाई।

(२) कर्मवाच्य क्रिया से जाना जाता है कि क्रिया का उद्देश उसका कर्म है। जैसे, काम किया जाता है, कथा सुनाई गई।

(क) कर्मवाच्य सकर्मक क्रियाओं में होता है। कर्त्तृवाच्य का कर्म कर्मवाच्य में उद्देश हो जाता है; जैसे, नौकर लकड़ी काटता है (कर्त्तृवाच्य), लकड़ी काटी जाती है (कर्मवाच्य)।

(३) भाववाच्य क्रिया का वह रूप है जिससे जाना जाता है कि क्रिया का उद्देश न उसका कर्त्ता है और न कर्म, किंतु

क्रिया का भाव है; जैसे, मुझसे नहीं चला जाता, धूप में किसी से नहीं बैठा जाता, स्त्री से कैसे सोया गया।

(क) भाववाच्य अकर्मक क्रियाओं में होता है और इसके साथ बहुधा "नहीं" का प्रयोग किया जाता है जिससे अशक्यता का बोध होता है।

(४) कर्मवाच्य और भाववाच्य में कर्त्ता को प्रकट करने की आवश्कता हो तो उसे करण कारक में रखते हैं; जैसे, नौकर से लकड़ी काटी गई, किसी से धूप में नहीं बैठा जाता।

पाठ—१७

काल

६७—गाय दौड़ती है।
गाय दौड़ी।
गाय दौड़ेगी।

ऊपर लिखे पहले वाक्य में "दौड़ती है" क्रिया से कहने के समय का बोध होता है। दूसरे वाक्य में "दौड़ी" क्रिया बीते हुए समय का बोध कराती है और तीसरे वाक्य में "दौड़ेगी" क्रिया से आगे का समय सूचित होता है। अलग-अलग समय सूचित करने के लिये क्रिया के रूप में विकार होता है; जैसे, दौड़ती है, दौड़ी, दौड़ेगी।

क्रिया के जिस रूप में काम के समय का बोध होता है उसे काल कहते हैं।

६८—क्रिया के मुख्य काल तीन हैं

(१) वर्तमान (२) भूत (३) भविष्यत्।

(१) वर्तमान काल क्रिया के उस रूप को कहते हैं जिससे काम का आरंभ तो पाया जाता है परंतु समाप्ति नहीं पाई जाती; जैसे, लड़का खेलता है, गाड़ी जाती है, हम पुस्तक पढ़ते हैं।

(२) क्रिया के जिस रूप से आरंभ और समाप्ति पाई जाती है उसे भूतकाल कहते हैं; जैसे बैल आया। घोड़ा गया। नौकर ने कोठा झाड़ा।

(३) जिस क्रिया से न आरंभ पाया जाता है और न समाप्ति पाई जाती है उसे भविष्यत् काल की क्रिया कहते हैं; जैसे, गाड़ी आवेगी, हम चिट्ठी लिखेंगे।

पाठ—१८

प्रयोग

६९—लड़का दौड़ता है।

लड़कियाँ दौड़ती हैं।

मैं जाता हूँ।

लड़के ने पुस्तकें पढ़ीं।

मा ने बेटियों को बुलाया।

ऊपर के पहले तीन वाक्यों में क्रिया का रूप कर्त्ता कारक के लिंग, वचन और पुरुष के अनुसार बदला है। चौथे

वाक्य में "पढ़ीं" क्रिया का रूप "पुस्तक" कर्म कारक के अनुसार है। पाँचवें वाक्य में "बुलाया" क्रिया का रूप न कर्त्ता कारक के अनुसार है न कर्म कारक के अनुसार ; किंतु पुल्लिंग एकवचन अन्य पुरुष में है। क्रिया का रूप कर्त्ता, कर्म वा भाव के पुरुष, लिंग और वचन के कारण बदलता है; जैसे, दौड़ता है, दौड़ते हैं। क्रिया के जिस रूप से जाना जाता है कि क्रिया के पुरुष, लिंग और वचन कर्त्ता कारक अथवा कर्म कारक के अनुसार हैं वा नहीं उसे प्रयोग कहते हैं।

७० प्रयोग तीन हैं कर्त्तरि प्रयोग, कर्मणि प्रयोग और भावे प्रयोग।

(१) जिस क्रिया के पुरुष, लिंग और वचन कर्त्ता कारक के अनुसार होते हैं उसे कर्त्तरि प्रयोग कहते हैं; जैसे, लड़का दौड़ता है, नौकर चिट्ठी लाया, वे नहीं बोले। कर्त्तरि प्रयोग के कर्त्ता में कोई चिह्न नहीं रहता। कर्त्तरि प्रयोग अकर्मक और सकर्मक क्रियाओं में होता है।

(२) जब क्रिया के पुरुष, लिंग, वचन कर्म कारक के अनुसार होते हैं तब वह कर्मणि प्रयोग में होती है, जैसे, मैंने चिट्ठी लिखी, लड़के ने लोटा उठाया। कर्मणि प्रयोग सकर्मक क्रिया में होता है और इस प्रयोग में कर्म कारक का को चिह्न नहीं आता।

(३) भावे प्रयोग क्रिया, न कर्त्ता कारक के अनुसार होती है न कर्म कारक के; किंतु अन्य पुरुष, पुल्लिंग एकवचन

में रहती है; जैसे, लड़कों ने गाय को पकड़ा, रानी ने सहेलियों को बुलाया।

भावे प्रयोग में कर्त्ता कारक ने चिह्न के साथ और कर्म कारक को चिह्न के साथ आता है। यह प्रयोग भी बहुधा सकर्मक क्रिया में होता है।

पाठ—१६

काल-रचना

कृदंत

७१—जिस शब्द के अंत में ना रहे और उससे किसी व्यापार का बोध होता हो उसे क्रिया का साधारण रूप कहते हैं; जैसे, गाना, सोना, जाना, लिखना। इन शब्दों का उपयोग संज्ञाओं के समान होता है, इसलिये इन्हें क्रियार्थक संज्ञाएँ भी कहते हैं; जैसे, वहाँ गाना होता है, हम गाना सुनते हैं।

७२—क्रिया के साधारण रूप के ना का लोप करने से जो अंश बच रहता है, उसको क्रिया की धातु कहते हैं। जैसे, गाना से गा; चलना से चल, धोना से धो।

७३—धातु के अंत में ता करने से वर्तमानकालिक कृदंत बनता है; जैसे, गा - गाता, खा - खाता, उड़ - उड़ता। वर्तमानकालिक कृदंत का उपयोग विशेषण के समान होता है; जैसे, गाता लड़का, उड़ती चिड़िया।

७४—अकारांत और उकारांत धातु के अंत में आ और दूसरे धातुओं के अंत में या जोड़ने से भूतकालिक कृदंत बनता है; जैसे, मर--मरा पढ़—पढ़ा, छू—छुआ, खा—खाया, पी--पिया। यह कृदंत भी विशेषण के समान आता है; जैसे, मरा घोड़ा, पढ़ा लड़का, छाया घर, सिया कपड़ा।

(क) नीचे लिखे भूतकालिक कृदंतों का रूप नियम-विरुद्ध है; जैसे,

कर	किया
जा	गया
हो	हुआ
दे	दिया
ले	लिया

(ख) वर्तमानकालिक और भूतकालिक कृदंतों के साथ बहुधा "हुआ" जोड़ देते हैं; जैसे, जाता हुआ, लिखा हुआ मरा हुआ।

७५—धातुओं के अंत में कर वा करके लगाने से पूर्वकालिक कृदंत बनता है; जैसे, जाकर, खा करके।

(१) कर्तृवाच्य क्रिया की काल-रचना

७६—वर्तमानकालिक कृदंत को कर्त्ता के पुरुष, लिंग और वचन के अनुसार बदलकर उसके आगे होना क्रिया के वर्तमान काल के रूप लगाने से वर्तमान काल बनता है; जैसे, मैं जाता हूँ, तुम जाती हो, वे जाते हैं।

(क) होना क्रिया के वर्तमान काल के रूप ये हैं -

	एकवचन	बहुवचन
उत्तम पुरुष	मैं हूँ	हम हैं
मध्यम पुरुष	तू है	तुम हो
अन्य पुरुष	वह है	वे हैं

(ख) "होना" क्रिया का वर्तमान काल बनाने के लिये ऊपर लिखे रूप "होना" क्रिया के वर्तमानकालिक कृदंत के साथ लगाए जाते हैं। जैसे,

कर्त्ता—पुल्लिंग

उत्तम पुरुष	मैं होता हूँ	हम होते हैं
मध्यम पुरुष	तू होता है	तुम होते हो
अन्य पुरुष	वह होता है	वे होते हैं

कर्त्ता—स्त्रीलिंग

उत्तम पुरुष	मै होती हूँ	हम होती हैं
मध्यम पुरुष	तू होती है	तुम होती हो
अन्य पुरुष	वह होती है	वे होती हैं

७७—भूतकालिक कृदंत में कर्त्ता के पुरुष-लिंग-वचन के अनुसार रूपांतर करने से भूत काल बनता है ; जैसे, मैं आया, तुम आई, वे आए।

(क) भूत काल में बोलना वर्ग की क्रियाओं को छोड़ शेष सकर्मक क्रियाओं के रूप कर्म के अनुसार अर्थात्

कर्मणि प्रयोग में रहते हैं ; जैसे, मैंने घोड़े देखे, हमने घोड़ी देखी, उन्होंने घोड़ा देखा।

७८ – धातु के अंत में कर्त्ता के पुरुष-लिंग-वचन के अनुसार नीचे लिखे प्रत्यय* जोड़ने से भविष्यत् काल बनता है।

कर्त्ता - पुल्लिंग

	एकवचन	बहुवचन
उत्तम पुरुष	ऊँगा	एँगे
मध्यम पुरुष	एगा	ओगे
अन्य पुरुष	एगा	एँगे

जैसे, मैं जाऊँगा, तुम जाओगे, वे जाएँगे।

(क) स्त्रीलिंग के रूप बनाने के लिये एकवचन और मध्यम पुरुष बहुवचन में गी तथा बहुवचन के दूसरे पुरुष में गीं लगाते हैं; जैसे, मै जाऊँगी, तुम साओगी, वे जाएँगीं।

(२) कर्मवाच्य की काल-रचना

७९ – सकर्मक क्रिया के भूतकालिक कृदंत के आगे कर्म के पुरुष-लिंग-वचन के अनुसार कालों में "जाना" क्रिया के रूप लगाने से कर्मवाच्य क्रिया बनती है; जैसे, मै देखा जाता हूँ, तुम देखी गई, वे देखे जाएँगे।

* एक शब्द से दूसरा शब्द बनाने में जो अक्षर जोड़े जाते हैं वे प्रत्यय कहाते हैं। जैसे, लड़का शब्द से लड़कपन बनाने में "पन" प्रत्यय जोड़ा गया है।

(३) भाववाच्य की काल-रचना

८०- जब अकर्मक क्रिया के रूप कर्मवाच्य क्रिया के समान होते हैं तब उन्हें भाववाच्य कहते हैं; जैसे, मुझसे चला गया, उससे बैठा जायगा।

(क) भाववाच्य क्रिया सदैव अन्य पुरुष पुल्लिंग एकवचन में रहती है।

क्रियाओं की काल-रचना के उदाहरण।

(१) कर्त्तृवाच्य

(क) अकर्मक क्रिया चलना

(१) वर्तमान काल

कर्त्तरि प्रयोग

कर्त्ता—पुल्लिंग

	एकवचन	बहुवचन
उ० पु०	मैं चलता हूँ	हम चलते हैं
म० पु०	तू चलता है	तुम चलते हो
अ० पु०	वह चलता है	वे चलते हैं

कर्त्ता- स्त्रीलिंग

उ० पु०	मैं चलती हूँ	हम चलती हैं
म० पु०	तू चलती है	तुम चलती हो
अ० पु०	वह चलती है	वे चलती हैं

(२) भूत काल

कर्त्तरि प्रयोग

कर्त्ता—पुल्लिंग

	एकवचन	बहुवचन
उ० पु०	मैं चला	हम चले
म० पु०	तू चला	तुम चले
अ० पु०	वह चला	वे चले

कर्त्ता—स्त्रीलिंग

उ० पु०	मैं चली	हम चलीं
म० पु०	तू चली	तुम चलीं
अ० पु०	वह चली	वे चलीं

(३) भविष्यत् काल

कर्त्तरि प्रयोग

कर्त्ता—पुल्लिंग

उ० पु०	मैं चलूँगा	हम चलेंगे
म० पु०	तू चलेगा	तुम चलोगे
अ० पु०	वह चलेगा	वे चलेंगे

कर्त्ता—स्त्रीलिंग

उ० पु०	मैं चलूँगी	हम चलेंगी
म० पु०	तू चलेगी	तुम चलोगी
अ० पु०	वह चलेगी	वे चलेंगी

(ख) सकर्मक क्रिया—देखना

(१) वर्त्तमान काल

कर्त्तरि प्रयोग

	एकवचन	बहुवचन
उ० पु०	मैं देखता हूँ	हम देखते हैं
म० पु०	तू देखता है	तुम देखते हो
अ० पु०	वह देखता है	वे देखते हैं

कर्त्ता—स्त्रीलिंग

उ० पु०	मैं देखती हूँ	हम देखती हैं
म० पु०	तू देखती है	तुम देखती हो
अ० पु०	वह देखती है	वे देखती हैं

(२) भूत काल

कर्मणि प्रयोग

कर्म—पुल्लिंग

मैंने वा हमने तूने वा तुमने उसने वा उन्होंने	देखा	देखे

कर्म—स्त्रीलिंग

मैंने वा हमने तूने वा तुमने उसने वा उन्होंने	देखी	देखीं

(३) भविष्यत् काल

कर्त्तरि प्रयोग

कर्त्ता—पुल्लिंग

	एकवचन	बहुवचन
उ० पु०	मैं देखूँगा	हम देखेंगे
म० पु०	तू देखेगा	तुम देखोगे
अ० पु०	वह देखेगा	वे देखेंगे

कर्त्ता—स्त्रीलिंग

उ० पु०	मैं देखूँगी	हम देखेंगी
म० पु०	तू देखेगी	तुम देखोगी
अ० पु	वह देखेगी	वे देखेंगी

२—कर्मवाच्य

सकर्मक क्रिया—देखना

(१) वर्तमान काल

कर्मणि प्रयोग

कर्म—पुल्लिंग

उ० पु०	मैं देखा जाता हूँ	हम देखे जाते हैं
म० पु०	तू देखा जाता है	तुम देखे जाते हो
अ० पु०	वह देखा जाता है	वे देखे जाते हैं

कर्म—स्त्रीलिंग

उ० पु०	मैं देखी जाती हूँ	हम देखी जाती हैं
म० पु०	तू देखी जाती है	तुम देखी जाती हो
अ० पु०	वह देखी जाती है	वे देखी जाती हैं

(२) भूतकाल

कर्मणि प्रयोग

कर्म पुल्लिंग

	एकवचन	बहुवचन
उ० पु०	मैं देखा गया	हम देखे गए
म० पु०	तू देखा गया	तुम देखे गए
अ० पु०	वह देखा गया	वे देखे गए

कर्म स्त्रीलिंग

उ० पु०	मैं देखी गई	हम देखी गईं
म० पु०	तू देखी गई	तुम देखी गईं
अ० पु०	वह देखी गई	वे देखी गईं

(३) भविष्यत् काल

कर्मणि प्रयोग

कर्म—पुल्लिंग

उ पु०	मैं देखा जाऊँगा	हम देखे जाएँगे
म० पु०	तू देखा जायगा	तुम देखे जाओगे
अ पु	वह देखा जायगा	वे देखे जाएँगे

कर्म—स्त्रीलिंग

उ० पु०	मैं देखी जाऊँगी	हम देखी जाएँगी
म० पु०	तू देखी जाएगी	तुम देखी जाओगी
अ० पु०	वह देखी जायगी	वे देखी जाएँगी

३—भाववाच्य

अकर्मक क्रिया—बैठना

(१) वर्तमान काल

भावे प्रयोग

मुझसे वा हमसे
तुझसे वा तुमसे
उससे वा उनसे } बैठा जाता है

२—भूतकाल

भावे प्रयोग

मुझसे वा हमसे
तुझसे वा तुमसे
उससे वा उनसे } बैठा गया

३—भविष्यत् काल

भावे प्रयोग

मुझसे वा हमसे
तुझसे वा तुमसे
उससे वा उनसे } बैठा जाएगा

अभ्यास

(क) नीचे लिखी क्रियाओं के वाच्य, काल और प्रयोग बताओ—तुम्हारी स्याही कैसे गिरी? मनुष्य अन्न खाता है। सबेरा हुआ। विद्वान् सब जगह पूजा जाता है। राम आवेगा। लड़के ने चिट्ठी

पढ़ो। सड़क सुधारी जाती है। मुझसे चला नहीं जाता। पत्र अभी भेजा जायेगा। रानियों ने सहेलियों को बुलाया।

(ख) नीचे लिखी क्रियाओं के भूतकाल के अन्य पुरुष, पुल्लिंग, बहुवचन के रूपों का उपयोग एक-एक वाक्य में करो—खोलना, हँसना, दौड़ना, बोलना आना।

(ग) कर्म-वाच्य और भावे प्रयोग का एक-एक उदाहरण दो।

पाठ—२०

पद-परिचय

८१ प्रत्येक शब्द का शब्द-भेद, रूपांतर और अन्य शब्दों से संबंध बताना पद-परिचय (व्याख्या) करना कहलाता है।

८२—अलग-अलग शब्द-भेदों के साथ जो परिचय दिया जाता है उसे हम निचे लिखते हैं—

(१) संज्ञा—लिंग, वचन, कारक, क्रिया से वा दूसरे शब्द से संबंध।

(२) सर्वनाम—मूल संज्ञा, पुरुष, लिंग, वचन, कारक, क्रिया से संबंध।

(३) विशेषण—विशेष्य, लिंग, वचन।

(४) क्रिया—प्रकार, वाच्य, काल, पुरुष, लिंग, वचन, कर्त्ता, कर्म, प्रयोग।

(५) क्रियाविशेषण—विशेष्य।

(६) संबंधसूचक—संबंधी शब्द।

(७) समुच्चयबोधक—संबंधी वाक्य।

(८) विस्मयादिबोधक—कारण।

पद-परिचय का उदाहरण

वाक्य—हाय! मेरा प्यारा मित्र अचानक चला गया और उसके जाने के पहले मैंने उसे न देखा।

हाय—विस्मयादि-बोधक, दुःख का मनोविकार सूचित करता है।

मेरा—सर्वनाम, बोलनेवाले के नाम के बदले आया, उत्तम पुरुष, पुल्लिंग, एकवचन, संबंध कारक, संबंधी "मित्र"।

मेरा सर्वनाम, यहाँ विशेषण की नाईं आया, विशेष्य "मित्र", पुल्लिंग, एकवचन।

प्यारा विशेषण, विशेष्य "मित्र", पुल्लिंग, एकवचन।

मित्र—संज्ञा, पुल्लिंग, एकवचन, कर्त्ता कारक, इसकी क्रिया "चला गया"।

अचानक क्रिया-विशेषण, "चला गया" क्रिया की विशेषता बताता है।

चला गया—क्रिया, अकर्मक कर्त्तृवाच्य, भूतकाल, अन्य पुरुष, पुल्लिंग, एकवचन, कर्त्ता "मित्र", कर्त्तरि प्रयोग।

और—समुच्चयबोधक अव्यय, दो वाक्यों को जोड़ता है—हाय! मेरा मित्र अचानक चला गया। उसके जाने के पहले मैंने उसे न देखा।

उसके—सर्वनाम, 'मित्र' संज्ञा के बदले आया, अन्य पुरुष, पुल्लिंग, एकवचन, संबंध कारक, संबंधी शब्द, "जाने के"।

जाने के—क्रियार्थक संज्ञा, पुल्लिंग, एकवचन, संबंध कारक, संबंधी शब्द "पहले"।

पहले—संबंधसूचक अव्यय, "जाने के", संज्ञा का संबंध "देखो", क्रिया से मिलाता है।

मैंने—सर्वनाम, बोलनेवाले के नाम के बदले आया, उत्तम पुरुष, पुल्लिंग, (वा स्त्रीलिंग), एकवचन, कर्त्ता कारक इसकी सकर्मक क्रिया "देखा"।

उसे—सर्वनाम, "मित्र" संज्ञा के बदले आया, अन्य पुरुष, पुल्लिंग, एकवचन, कर्म कारक, इसकी सकर्मक क्रिया 'देखा'।

न—क्रियाविशेषण, "देखा" क्रिया की विशेषता बतलाता है।

देखा—क्रिया, सकर्मक, कर्त्तृवाच्य, अन्य पुरुष, पुल्लिंग, एकवचन, इसका कर्त्ता मैंने, कर्म उसे, भावे प्रयोग।

अभ्यास

नीचे लिखे वाक्यों में प्रत्येक शब्द का पद-परिचय करो—सिंह-गरजता है। महाराज ने मेरा हाल पूछा। एक भेड़िया किसी नदी में ऊपर की तरफ पानी पी रहा था। मुर्गी हर दिन अंडे देगी और मैं उनको बेचूँगा। दूसरे दिन सबेरे सब लड़के कोतवाली में बुलाए गए। यदि तुम यह बात सुनोगे तो तुम्हें लाभ होगा। हिंदुस्तान में कई जगह काँच के कारखाने हैं; परंतु इसका बहुत सा सामान विदेश से आता है।

पाठ २१

साधारण वाक्य का पृथक्करण

८३ जिस वाक्य में एक उद्देश और एक विधेय रहता है उसे साधारण वाक्य कहते हैं; जैसे, हवा चलती है। आज लड़के बाहर न जायँगे।

८४ नीचे लिखे शब्द-भेद वाक्य का उद्देश होते हैं-

(१) संज्ञा -लड़का दौड़ता है। घोड़ा जंगल की तरफ भागा।

(२) सर्वनाम --मैं वहाँ जाऊँगा। वे पुस्तक पढ़ते थे। तुम क्या करते हो।

(३) विशेषण (विशेष्य के बिना) नीच निचाई करते हैं, सज्जन उपकारी होते हैं।

(४) क्रियार्थक संज्ञा—कहना सहज है, करना कठिन है, मरना दुःखदायी होता है।

८५--उद्देश के अर्थ को बढ़ानेवाले शब्द उद्देश-वर्द्धक कहलाते हैं। नीचे लिखे शब्द उद्देश-वर्द्धक हैं---

(१) विशेषण---छोटा लड़का खेलता है। लाल फूल सूख गया है।

(२) संबंधकारक—चूहे की पूँछ लंबी होती है। मेरा मित्र आया है।

(३) उद्देश के अर्थ की दूसरी (समानाधिकरण) संज्ञा—दशरथ के पुत्र राम वन को गए। मेरा भाई मोहन आया है।

(४) कृदंत विशेषण—चलती गाड़ी रुक गई। मरा घोड़ा खेत में पड़ा है।

(५) ऊपर लिखे कई उद्देश-वर्द्धक साथ-साथ आ सकते हैं; जैसे महारानी की लिखी हुई वह गुप्त चिट्ठी मंत्री को दी गई। जहाज का सबसे ऊपर का हिस्सा पहले दिखाई देता है।

८६—विधेय में मुख्य शब्द क्रिया है। यदि क्रिया सकर्मक हो तो उसके साथ कर्म रहता है। जैसे, लड़के दौड़ते हैं। बढ़ई ने लकड़ी काटी।

कर्म में उद्देश के समान नीचे लिखे शब्द-भेद आते हैं

(१) संज्ञा—मैं लड़के को बुलाता हूँ। चोर ने घड़ी चुराई।

(२) सर्वनाम—सिपाही मुझे जानता है। हम तुम्हें बुलाते हैं।

(३) विशेषण—सीधे को सब चिढ़ाते हैं। दीन को मत सताओ।

(४) क्रियार्थक संज्ञा—वह गाना सीखता है। हमने घूमना छोड़ दिया।

(क) होना, दिखना, निकलना, ठहरना आदि अकर्मक क्रियाओं के साथ कभी कभी उनका अर्थ पूरा करने के लिये संज्ञा या विशेषण आता है जिसे पूर्ति कहते हैं; जैसे, लड़का चतुर है। मोहन बीमार दिखता है। गोपाल चालाक निकला। तुम मेरे मित्र ठहरे।

८७—जिस प्रकारके शब्द उद्देश-वर्द्धक होते हैं उसी प्रकार के शब्द कर्म और पूर्ति की संज्ञाओं का अर्थ बढ़ाते हैं; जैसे देव ने उस मनुष्य की कुल्हाड़ी निकाली (कर्मवर्द्धक)। चंद्रहास उस राजा का बड़ा लड़का था (पूर्तिवर्द्धक)।

८८—विधेय का अर्थ बढ़ानेवाले शब्दों को विधेय-वर्द्धक कहते हैं। नीचे लिखे शब्द विधेय-वर्द्धक होते हैं—

(१) क्रियाविशेषण—वह जल्दी चलता है। लड़का अभी आवेगा। नौकर वहाँ सोता था।

(२) संबंधसूचक के साथ आनेवाली संज्ञा वा सर्वनाम लड़का भूख के मारे मर गया। वे मेरे यहाँ रहते हैं।

(३) करण, संप्रदान, अपादान और अधिकरण कारक मैंने छुरी से आम काटा। उस घोड़े से यह घोड़ा छोटा है। वे नहाने को गए हैं। इस घर में एक सिपाही रहता था।

(४) पूर्वकालिक कृदंत—लड़का उठकर भागा। तुम दौड़कर चलते हो। वह रोटी खाकर गया।

ऊपर लिखे कई एक विधेय-वर्द्धक साथ-साथ आ सकते हैं; जैसे, औरंगजेब के मरने पर उसके बेटों में तख्त के लिये

लड़ाई हुई। यह प्रसंग देख, जयपुरवाले राजा जगतसिंह ने, बड़ी भारी सेना से राजा मानसिंह के साथ, संग्राम करने की तैयारी की।

८६—अर्थ के अनुसार विधेय-वर्द्धक के छः भेद होते हैं; जैसे, (१) कालवाचक—सवेरे ठंढी हवा चलती है। मेरे जाने तक वह ठहरेगा।

(२) स्थानवाचक—गंगा हिमालय से निकलती है। मेरे पास एक घड़ी है। लड़का यहाँ रहता है।

(३) रीतिवाचक—मैंने उसके हाथ रुपया भेजा। लड़का मन से पढ़ता है। मैंने छुरी से आम काटा।

(४) परिमाणवाचक—मुझे दुष्टों ने बहुत सताया। धन से विद्या श्रेष्ठ है।

(५) कारणवाचक—मित्र के मिलने से सुख होता है। आपके उपदेश से लाभ हुआ। लड़का भूख के मारे मर गया।

(६) कार्यवाचक—हम नाटक देखने को गए थे। वह मेरे लिये एक किताब लाया।

साधारण वाक्यों के पृथक्करण के उदाहरण।

वाक्य

(१) उनके पास एक सुंदर तसवीर थी।

(२) कुत्ता ईमानदार जानवर है।

(३) एक भेड़िया किसी नदी में ऊपर की तरफ पानी पी रहा था।

(४) बिना सफाई के निरोगी रहना कठिन है।

(५) इस जन्म में मैंने कई अन्याय किए हैं।

वाक्य	उद्देश		विधेय			विधेय-वर्द्धक
	मु०उ०	उ०व०	क्रिया	कर्म	पूर्त्ति	
(१)	तस्वीर	एक सुंदर	थी	०	०	उनके पास (स्थान०)
(२)	कुत्ता	०	है	०	ईमानदार जानवर	०
(३)	भेड़िया	एक	पी रहा था	पानी	०	किसी नदी में (स्थान)
(४)	निरोगी रहना	०	है	०	कठिन	बिना सफाई के (रीति०)
(५)	मैंने	०	किए हैं	कई अन्याय	०	इस जन्म में (काल०)

अभ्यास

(क) नीचे लिखे वाक्यों में उद्देशों के साथ उद्देशवर्द्धक जोड़ो—हवा चली। लड़के खेलते हैं। दीवाल गिरी। कुत्ता भागा। घर कब बना? लड़की रोती है। नौकर कोठा झाड़ेगा।

(ख) नीचे लिखी अकर्मक क्रियाओं में पूर्ति जोड़ो—

ईश्वर है। लड़का निकला। राजा होगा। आदमी दिखता है। सिपाही बनाया गया। मोहन कहलाता है।

(ग) नीचे लिखे विधेयों में विधेयवर्धक जोड़ो—

पेड़ में पत्ते हिलते हैं। सूर्य्य निकल रहा है। चंद्रमा शोभा देता है। लड़का खेलता है। एक आदमी आया। मेरा भाई जावेगा। घोड़ा चर रहा है। नौकर कोठा झाड़ेगा। लड़कियाँ पानी लाईं। हरिण जंगल को भागा।

(घ) नीचे लिखे वाक्यों का पृथक्करण करो—

किसान खेत जोतता है। मालिक ने नौकर को बुलाया। हाथी सबसे बड़ा जानवर है। साधु लोग सदैव ईश्वर का भजन करते हैं। मेरे मित्र की चिट्ठी आई है। कच्चा भोजन जल्दी नहीं पचता। मोटा आदमी दुबले आदमी की अपेक्षा आसानी से तैर सकता है। कौए की चोंच पानी तक न जा सकी। सन् १५६४ ई० में कड़ामानकपुर के नव्वाब आसिफखाँ ने गढ़ा मंडले पर चढ़ाई की।

पाठ—२२

अक्षर

९०—सबेरे उठो।

इस वाक्य में दो शब्द हैं—सबेरे और उठो। सबेरे शब्द तीन ध्वनियों से बना है—स, बे, रे। इन ध्वनियों में से प्रत्येक के और भी खंड हो सकते; जैसे, स = स् + अ; बे = ब् + ए; रे = र् + ए। स्, अ, ब्, ए, र्, ए मूल ध्वनियाँ कहाती हैं; क्योंकि इनके और खंड नहीं हो सकते।

इसी प्रकार "उठो" शब्द में तीन मूल ध्वनियाँ हैं—उ, ठ्, ओ। मूल ध्वनि को व्याकरण में वर्ण कहते हैं। लिखने में मूल ध्वनि के लिये जो चिह्न मान लिया जाता है वह भी वर्ण कहलाता है; जैसे, क्, अ, र्, अ। वर्णों के मेल से शब्द बनाए जाते हैं।

९१- वर्ण दो प्रकार के होते हैं (१) स्वर (२ व्यंजन।

९२- स्वर उन वर्णों को कहते हैं जिनका उच्चारण स्वतंत्रता से होता है। हिंदी में ११ स्वर हैं; जैसे, अ, आ, इ, ई, उ ऊ, ऋ, ए, ऐ, ओ, औ।

९३--व्यंजन वे वर्ण हैं जिनका उच्चारण स्वरों की सहायता के बिना नहीं होता। हिंदी में ३३ व्यंजन हैं।

क ख ग घ ङ। च छ ज झ ञ।

ट ठ ड ढ ण। त थ द ध न।

प फ ब भ म। य र ल व श ष स ह।

सूचना - इन व्यंजनों में उच्चारण की सुगमता के लिये अ मिला हुआ है। जब व्यंजन में कोई स्वर नहीं मिला रहता तब उसके नीचे एक तिरछी रेखा (्) कर देते हैं जिसे हल् कहते हैं; जैसे चक्कर और धर्म शब्दों में।

९४- व्यंजनों में दो वर्ण और हैं जो अनुस्वार और विसर्ग कहलाते हैं। अनुस्वार का चिह्न स्वर के ऊपर एक बिंदी और विसर्ग का चिह्न स्वर के पश्चात् दो बिंदियाँ हैं; जैसे अंक और दुःख शब्दों में। ये वर्ण सदैव स्वर के पीछे बोले जाते हैं।

९५ व्यंजनों के अनेक प्रकार के उच्चारण सूचित करने के लिये उनके साथ स्वर जोड़े जाते हैं। व्यंजनों में मिलने से स्वर का रूप बदल जाता है और उसे मात्रा कहते हैं। प्रत्येक स्वर की मात्रा नीचे दी जाती है—

अ आ इ ई उ ऊ ऋ ए ऐ ओ औ

ा ि ी ु ू ृ े ै ो ौ

९६—अ की कोई मात्रा नहीं है। जब किसी व्यंजन में अ मिलाया जाता है तब उसके नीचे का हल् निकाल देते हैं; जैसे, क्+अ=क, ग्+अ=ग।

९७—स्वर अथवा स्वरांत व्यंजन को अक्षर कहते हैं: जैसे, अ, क, म। अक्षरों का नाम लेते समय उनके आगे बहुधा कार जोडते हैं; जैसे, अ=अकार, क=ककार।

९८—अ, इ, उ, ऋ ह्रस्व स्वर कहाते हैं क्योंकि इनके उच्चारण में थोडा समय लगता है। आ ई ऊ ए ऐ ओ औ को दीर्घ स्वर कहते हैं, क्योंकि इनके उच्चारण में ह्रस्व स्वर से दूना काल लगता है।

९९—व्यंजनों के साथ अलग अलग सब स्वरों के मेल को बारहखड़ी कहते हैं। क् की बारहखडी नीचे दी जाती है

क का कि की कु कू के कै को कौ कं कः

१००—जब दो वा अधिक व्यंजनों के बीच में स्वर नहीं रहता तब वे मिलाकर लिखे जाते हैं और उन्हें संयुक्त व्यंजन कहते हैं; जैसे, क्य, स्म, त्र।

१०१—क्+ष मिलकर क्ष, त्+र मिलकर त्र और ज्+ञ मिलकर ज्ञ बनता है।

१०२—यदि हलंत रकार व्यंजन के पूर्व हो तो वह उस व्यंजन के ऊपर रेफ (र्) के रूप में लिखा जाता है और यदि व्यंजन के पीछे आवे तो उसके नीचे दो रूपों में लिखा जाता है ; जैसे, धर्म, अर्थ, चक्र, राष्ट्र।

१०३—ङ्, ञ्, ण्, न्, म्, अपने ही वर्ग के व्यंजनों से मिलते हैं अथवा अनुस्वार के रूप में रहते हैं ; जैसे, गङ्गा=गंगा, चञ्चल=चंचल, पण्डित=पंडित, सन्त=संत, लम्ब=लंब।

१०४—साधारण व्यंजनों के समान संयुक्त व्यंजनों में भी स्वर जोड़कर बारहखड़ी बनाते हैं ; जैसे, क्र, क्रा, क्रि, क्री, क्रु, क्रू, क्रे, क्रै, क्रो, क्रौ, क्रं, क्रः।

अभ्यास

(क) नीचे लिखे शब्दों में स्वर और व्यंजन बताओ—घर, कपड़ा, सबेरा, कौआ, गाएँ, चीता, ऊँट, उपाय।

(ख) क्ष, त्र, ज्ञ, त्त, क्र, किन किन वर्णों के मेल से बनते हैं ?

(ग) नीचे लिखे शब्दों को लिखने में क्या भूलें हैं—घन्टा, र्धम, पथ्तर।

परिशिष्ट

प्रश्नावली

(सू० -- व्याकरण के प्रश्नों में उदाहरण का भाव रहता है)

(१) वाक्य किसे कहते हैं ?

(२) शब्द और वाक्य में क्या अंतर है ?

(३) वाक्य में कम से कम कितने शब्द चाहिएँ और क्यों ?

(४) लोप का क्या अर्थ है ?

(५) उद्देश और विधेय की परिभाषा कहो।

(६) उद्देश और संज्ञा का अंतर समझाओ।

(७) संज्ञा और क्रिया में क्या अंतर है ?

(८) विशेष्य किसे कहते हैं ?

(९) विशेषण और क्रियाविशेषण में क्या अंतर है ?

(१०) सर्वनाम किसे कहते हैं।

(११) वाक्य-रचना में सर्वनाम के आने से क्या लाभ होता है ?

(१२) सर्वनाम और संज्ञा का अंतर समझाओ।

(१३) विशेषण और भाववाचक संज्ञा में क्या अंतर है ?

(१४) कर्म क्या है ?

(१५) सकर्मक और अकर्मक क्रियाओं का अंतर बताओ।

(१६) कर्त्ता किसे कहते हैं ?

(१७) क्रिया-विशेषण और संबंध-सूचक में क्या अंतर है ?

(१८) समुच्चय-बोधक का लक्षण कहो।

(१९) समुच्चय-बोधक और संबंध-सूचक में क्या अंतर है ?

(२०) विस्मयादि-बोधक में दूसरे शब्द-भेदों से क्या विशेषता है ?

(२१) संबंध-सूचक और विभक्ति का अंतर समझाओ।

(२२) अव्यय क्या है ?

(२३) कौन-कौन से शब्द-भेद अव्यय कहलाते हैं और क्यों ?

(२४) वाक्य में मुख्य शब्द-भेद कौन-कौन होते हैं ?

(२५) विशेषण और क्रिया-विशेषण मुख्य शब्द-भेद क्यों नहीं हैं ?

(२६) संज्ञा का रूप किन-किन अवस्थाओं में बदलता है ?

(२७) लिंग का लक्षण कहो।

(२८) अप्राणिवाचक संज्ञाओं के लिंग को पहचान कैसे होती है ?

(२९) पुल्लिंग से स्त्रीलिंग बनाने के नियम बताओ।

(३०) हिंदी में बहुवचन के कौन-कौन भेद हैं ?

(३१) संख्या के सिवा बहुवचन से और कौन सा अर्थ पाया जाता है ?

(३२) विभक्ति-सहित बहुवचन के कौन-कौन चिह्न हैं ?

(३३) कारक किसे कहते हैं ?

(३४) करण और अपादान कारकों में क्या अंतर है ?

(३५) संबंधी शब्द किसे कहते हैं ?

(३६) संबंध कारक की विभक्तियाँ कितनी हैं और उनके उपयोग के नियम क्या हैं ?

(३७) कारक-रचना का क्या अर्थ है ?

(३८) "पिता" और "बेटा" संज्ञाओं की कारक-रचना का अंतर कहो।

(३६) सर्वनामों के लिंग की क्या पहचान है ?

(४०) सर्वनाम की कारक-रचना किस कारक में नहीं होती और क्यों ?

(४१) सर्वनामों में संबंध कारक की कौन-कौन विभक्तियाँ लगाई जाती है ?

(४२) किन विशेषणों में विकार होता है ?

(४३) विशेषणों में विकार होने के नियम बताओ।

(४४) समझाओ कि विशेषण का कार्य संबंध कारक से भी होता है।

(४५) क्रिया का रूप किन किन अवस्थाओं में बदलता है ?

(४६) वाच्य और प्रयोग में क्या अंतर है ?

(४७) काल किसे कहते हैं ?

(४८) काल-रचना का क्या अर्थ है ?

(४६) पूर्वकालिक कृदंत कैसे बनता है ?

(५०) भावे प्रयोग की परिभाषा बताओ ?

(५१) कर्मवाच्य और भाववाच्य कैसे बनाए जाते हैं ?

(५२) साधारण वाक्य किसे कहते हैं ?

(५३) उद्देश-वर्द्धक कौन कौन से शब्द होते हैं ?

(५४) समानाधिकरण संज्ञा क्या है ?

(५५) किन क्रियाओं में पूर्त्ति रहती है ?

(५६) कर्म में कौन कौन शब्द आते हैं ?

(५७) विधेय-वर्द्धक कितने प्रकार के होते हैं ?

(५८) विधेय-वर्द्धक में कौन कौन से कारक आते हैं ?

(५९) वर्ण किसे कहते हैं ?

(६०) स्वर और व्यंजन का भेद समझाओ।

(६१) वर्ण और अक्षर में क्या अंतर है ?

(६२) शब्द कैसे बनता है ?

(६३) संयुक्त व्यंजन किन्हें कहते हैं ?